

स्तोत्रमञ्जरी
(बालपाठः)

अनुक्रमणिका

| | |
|---|----|
| नित्यपारायण-स्तोत्राणि | 1 |
| सरस्वती प्रार्थना | 1 |
| माहेश्वरसूत्राणि | 3 |
| भागवतस्मरणम् | 3 |
| प्रातः स्मरणम् | 3 |
| चिरञ्जीविस्तोत्रम् | 4 |
| पञ्चकन्यास्मरणम् | 4 |
| अर्जुन-नामानि (विराटपर्वान्तर्गतम्) | 4 |
| स्वस्ति-वचनम्/गुरुवन्दनम् | 4 |
| आदित्यहृदयम् | 5 |
| षष्ठीदेवी स्तोत्रम् | 8 |
| प्रज्ञाविवर्धन-कार्तिकेय-स्तोत्रम् | 10 |
| विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् | 12 |
| गणेशस्तोत्राणि | 31 |
| महागणेशपञ्चरत्नम् | 31 |
| आदित्यस्तोत्राणि | 33 |
| सूर्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् | 33 |
| द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः | 35 |
| शिवस्तोत्राणि | 37 |
| शिवमानसपूजा | 37 |
| वैद्यनाथाष्टकम् | 38 |
| उमामहेश्वरस्तोत्रम् | 39 |
| शक्तिस्तोत्राणि | 42 |

| | |
|--|-----------|
| ललितापञ्चरत्नम् | 42 |
| मूकसारः | 43 |
| सुब्रह्मण्यस्तोत्राणि | 51 |
| सुब्रह्मण्यभुजङ्गम् | 51 |
| रामस्तोत्राणि | 57 |
| सङ्क्षेपरामायणम् | 57 |
| कृष्णस्तोत्राणि | 71 |
| गोविन्दाष्टकम् | 71 |
| भज गोविन्दम् | 72 |
| कृष्णाष्टकम् ३ | 73 |
| हनुमत्-स्तोत्राणि | 75 |
| हनुमत् पञ्चरत्नम् | 75 |
| गुरुस्तोत्राणि | 77 |
| शङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् | 77 |
| तोटकाष्टकम् | 79 |
| देवीस्तोत्राणि | 81 |
| शीतलाष्टकम् | 81 |
| महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम् | 82 |
| लक्ष्म्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् | 86 |
| कनकधारास्तवम् | 89 |
| सरस्वत्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् | 93 |
| वेङ्कटेशस्तोत्राणि | 95 |
| वेङ्कटेश सुप्रभातम् | 95 |

| | |
|---|------------|
| வேङுடேஷ ஸ்தோத்ரம் | 100 |
| வேङுடேஷ ஸ்ரபத்தி: | 101 |
| வேङுடேஷ மங்ளாஷாஸனம் | 104 |
| நவ஗்ரஹஸ்தோத்ராணி | 106 |
| நவ஗்ரஹஸ்தோத்ரம் | 106 |
| நதீ-ஸ்தோத்ராணி | 107 |
| ஗ங்ளாஶ்டகம் | 107 |
| காவேரீ ஸ்ரார்த்தனா | 109 |
| வந்தே மாதரம் | 110 |
| க்ஷமா ஸ்ரார்த்தனா | 111 |
| ஜ்யோதிஷ-வால-பா஠: | 112 |
| ஸ்வத்ஸரா: ஷ்டி: | 112 |
| அயனே ட்வே | 113 |
| ஠்஠த்வ: ஷட் | 113 |
| பாருவாங்கள் ஆறு | 113 |
| மாஸா: ட்வாடஷ | 114 |
| பக்ஷௌ ட்வௌ | 115 |
| திதய: பஞ்டஷ | 115 |
| வாஸரா: ஸஸ (கிழ்஠ைகள் ஏழு) | 116 |
| நக்ஷத்ராணி ஸஸவி்ஷதி: நக்ஷத்ராங்கள் இருபத்஠ேழு | 116 |
| யோ஗ா: ஸஸவி்ஷதி: | 120 |
| கரணானி ஁காடஷ | 121 |
| ஗்ரஹா: நவ | 123 |

॥ ॐ श्री-गणेशाय नमः ॥

॥ ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः ॥

॥ हरिः ॐ ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

अगजानानपद्मार्कं गजाननमहर्निशम्।
अनेकदन्तं भक्तानाम् एकदन्तमुपास्महे ॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम्।
पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः ॥

सदाशिवसमारम्भां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।
अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

श्रुतिस्मृतिपुराणानाम् आलयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादशङ्करं लोकशङ्करम् ॥



॥ सरस्वती प्रार्थना ॥

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि।
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

पद्मपत्रविशालाक्षी पद्मकेसरवर्णिनी।
नित्यं पद्मालया देवी सा मां पातु सरस्वती॥

या कुन्देन्दु-तुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणा-वरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा पूजिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिनिभैरक्षमालां दधाना
हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण।
भासा कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकमणिनिभा भासमानाऽसमाना
सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना॥



॥ माहेश्वरसूत्राणि ॥

नृत्तावसाने नटराजराजो
ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धान्
एतद्विमर्शं शिवसूत्रजालम् ॥

| | | |
|-----------|-------------|------------|
| १. अइउण् | ६. लण् | ११. खफछठथ- |
| २. ऋलृक् | ७. जमङणनम् | चटतव् |
| ३. एओङ् | ८. झभञ् | १२. कपय् |
| ४. ऐऔच् | ९. घढधष् | १३. शषसर् |
| ५. हयवरट् | १०. जबगडदश् | १४. हल् |

॥ इति माहेश्वराणि सूत्राणि ॥

॥ भागवतस्मरणम् ॥

पाण्डवा ऊचुः

प्रह्लाद-नारद-पराशर-पुण्डरीक
व्यासाम्बरीष-शुक-शौनक-भीष्म-दाल्भ्यान्।
रुक्माङ्गदार्जुन-वसिष्ठ-विभीषणादीन्
पुण्यानिमान् परमभागवतान् समरामि ॥

॥ प्रातः स्मरणम् ॥

कर्कोटकस्य नागस्य दमयन्त्या नलस्य च।
ऋतुपर्णस्य राजर्षेः कीर्तनं कलिनाशनम् ॥

॥ चिरञ्जीविस्तोत्रम् ॥

अश्वत्थामा बलिव्यासो हनुमांश्च विभीषणः
 कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरञ्जीविनः ।
 सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्
 जीवेद्वर्षशतं प्राज्ञ अपमृत्युविवर्जितः ॥

॥ पञ्चकन्यास्मरणम् ॥

अहल्या द्रौपदी सीता तारा मन्दोदरी तथा ।
 पञ्चकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम् ॥

॥ अर्जुन-नामानि (विराटपर्वान्तर्गतम्) ॥

अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः ।
 बीभत्सुर्विजयः कृष्णः सव्यसाची धनञ्जयः ॥

॥ स्वस्ति-वचनम्/गुरुवन्दनम् ॥

॥ ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः ॥

॥ श्री-महात्रिपुरसुन्दरी-समेत-श्री-चन्द्रमौलीश्वराय नमः ॥

॥ श्री-काञ्ची-कामकोटि-पीठाधिपति-जगद्गुरु-
 श्री-शङ्कराचार्य श्री-चरणयोः प्रणामाः ॥

स्वस्ति श्रीमद्-अखिल-भूमण्डलालङ्कार-त्रयस्त्रिंशत्-कोटि-देवता-
 सेवित-श्री-कामाक्षी-देवी-सनाथ-श्रीमद्-एकाम्रनाथ-श्री-महादेवी-
 सनाथ-श्री-हस्तिगिरिनाथ-साक्षात्कार-परमाधिष्ठान-सत्यव्रत-
 नामाङ्कित-काञ्ची-दिव्य-क्षेत्रे, शारदामठ-सुस्थितानाम्,

अतुलित-सुधारस-माधुर्य-कमलासन-कामिनी-धम्मिल्ल-सम्फुल्ल-
 मल्लिका-मालिका-निःष्यन्द-मकरन्द-झरी-सौवस्तिक-वाङ्मिगुम्फ-
 विजृम्भणानन्द-तुन्दिलित-मनीषि-मण्डलानाम्,
 अनवरताद्वैत-विद्या-विनोद-रसिकानां
 निरन्तरालङ्कृतीकृत-शान्ति-दान्ति-भूम्नाम्, सकल-भुवन-चक्र-
 प्रतिष्ठापक-श्रीचक्र-प्रतिष्ठा-विख्यात-यशोऽलङ्कृतानाम्,
 निखिल-पाषण्ड-षण्ड-कण्टकोत्पाटनेन
 विशदीकृत-वेद-वेदान्त-मार्ग-षण्मत-प्रतिष्ठापकाचार्याणाम्,
 परमहंस-परिव्राजकाचार्यवर्य-जगद्गुरु-श्रीमत्-शङ्करभगवत्पादा-
 चार्याणाम्, अधिष्ठाने
 सिंहासनाभिषिक्त-श्रीमत्-चन्द्रशेखरेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानाम्
 अन्तेवासिवर्य-श्रीमद्-जयेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानाम्
 अन्तेवासिवर्य-श्रीमत्-शङ्करविजयेन्द्र-सरस्वती-श्रीपादानां
 चरण-नलिनयोः सप्रश्रयं साञ्जलिबन्धं च नमस्कुर्मः ॥

॥ आदित्यहृदयम् ॥

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्।
 रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम् ॥ १ ॥

दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्।
 उपागम्याब्रवीद्रामम् अगस्त्यो भगवान् ऋषिः ॥ २ ॥

राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्।
 येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसि ॥ ३ ॥

आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
जयावहं जपेन्नित्यम् अक्षय्यं परमं शिवम् ॥ ४ ॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वपापप्रणाशनम्।
चिन्ताशोकप्रशमनम् आयुर्वर्धनमुत्तमम् ॥ ५ ॥

रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम् ॥ ६ ॥

सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः।
एष देवासुरगणान् लोकान् पाति गभस्तिभिः ॥ ७ ॥

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः ॥ ८ ॥

पितरो वसवः साध्या ह्यश्विनौ मरुतो मनुः।
वायुर्वह्निः प्रजाप्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः ॥ ९ ॥

आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशो भानुर्विश्वरेता दिवाकरः ॥ १० ॥

हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्ड अंशुमान् ॥ ११ ॥

हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनो भास्करो रविः।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः ॥ १२ ॥

व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुस्सामपारगः।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवङ्गमः ॥ १३ ॥

आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः ॥ १४ ॥

नक्षत्रग्रहताराणाम् अधिपो विश्वभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते ॥ १५ ॥

नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ॥ १६ ॥

जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः ॥ १७ ॥

नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः।
नमः पद्मप्रबोधाय मार्तण्डाय नमो नमः ॥ १८ ॥

ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूर्यायादित्यवर्चसे।
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः ॥ १९ ॥

तमोग्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः ॥ २० ॥

तप्तचामीकराभाय वह्नये विश्वकर्मणे।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे ॥ २१ ॥

नाशयत्येष वै भूतं तदेव सृजति प्रभुः।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः ॥ २२ ॥

एष सुप्तेषु जागर्ति भूतेषु परिनिष्ठितः।
एष एवाग्निहोत्रं च फलं चैवाग्निहोत्रिणाम् ॥ २३ ॥

वेदाश्च क्रतवश्चैव क्रतूनां फलमेव च।
यानि कृत्यानि लोकेषु सर्व एष रविः प्रभुः ॥ २४ ॥

एनमापत्सु कृच्छ्रेषु कान्तारेषु भयेषु च।
कीर्तयन् पुरुषः कश्चिन्नावसीदति राघव ॥ २५ ॥

पूजयस्वैनमेकाग्रो देवदेवं जगत्पतिम्।
एतत् त्रिगुणितं जप्त्वा युद्धेषु विजयिष्यसि ॥ २६ ॥

अस्मिन् क्षणे महाबाहो रावणं त्वं वधिष्यसि।
एवमुक्त्वा तदाऽगस्त्यो जगाम च यथाऽऽगतम् ॥ २७ ॥

एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत्तदा।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान् ॥ २८ ॥

आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वा तु परं हर्षमवाप्तवान्।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान् ॥ २९ ॥

रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा युद्धाय समुपागमत्।
सर्वयत्नेन महता वधे तस्य धृतोऽभवत् ॥ ३० ॥

अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निश्चिरपतिसङ्क्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ॥ ३१ ॥

॥ इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये युद्धकाण्डे
आदित्यहृदयं नाम सप्तोत्तरशततमः सर्गः ॥

॥ षष्ठीदेवी स्तोत्रम् ॥

प्रियव्रत उवाच

नमो देव्यै महादेव्यै सिद्ध्यै शान्त्यै नमो नमः।
शुभायै देवसेनायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥ १ ॥

वरदायै पुत्रदायै धनदायै नमो नमः।
सुखदायै मोक्षदायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥ २ ॥

शक्तेः षष्ठांशरूपायै सिद्धायै च नमो नमः।
मायायै सिद्धयोगिन्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥ ३ ॥

पारायै पारदायै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
सारायै सारदायै च पारायै सर्वकर्मणाम् ॥ ४ ॥

बालाधिष्ठातृदेव्यै च षष्ठीदेव्यै नमो नमः।
कल्याणदायै कल्याण्यै फलदायै च कर्मणाम्।
प्रत्यक्षायै च भक्तानां षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥ ५ ॥

पूज्यायै स्कन्दकान्तायै सर्वेषां सर्वकर्मसु।
देवरक्षणकारिण्यै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥ ६ ॥

शुद्धसत्त्वस्वरूपायै वन्दितायै नृणां सदा।
हिंसाक्रोधैर्वर्जितायै षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥ ७ ॥

धनं देहि प्रियां देहि पुत्रं देहि सुरेश्वरि।
धर्मं देहि यशो देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥ ८ ॥

भूमिं देहि प्रजां देहि देहि विद्यां सुपूजिते।
कल्याणं च जयं देहि षष्ठीदेव्यै नमो नमः ॥ ९ ॥

इति देवीं च संस्तूय लेभे पुत्रं प्रियव्रतः।
यशस्विनं च राजेन्द्रं षष्ठीदेवीप्रसादतः ॥ १० ॥

षष्ठीस्तोत्रमिदं ब्रह्मण् यः शृणोति च वत्सरम्।
अपुत्रो लभते पुत्रं वरं सुचिरजीवनम् ॥ ११ ॥

वर्षमेकं च या भक्त्या संयतेदं शृणोति च।
सर्वपापाद्विनिर्मुक्ता महाबन्ध्या प्रसूयते ॥ १२ ॥

वीरपुत्रं च गुणिनं विद्यावन्तं यशस्विनम्।
सुचिरायुष्मन्तमेव षष्ठीमातृप्रसादतः ॥ १३ ॥

काकवन्ध्या च या नारी मृतापत्या च या भवेत्।
वर्षं श्रुत्वा लभेत्पुत्रं षष्ठीदेवीप्रसादतः ॥ १४ ॥

रोगयुक्ते च बाले च पिता माता शृणोति च।
मासं च मुच्यते बालः षष्ठीदेवीप्रसादतः ॥ १५ ॥

॥ इति श्री-ब्रह्मवैवर्तमहापुराणे प्रकृतिखण्डे
श्री-नारद-नारायण-संवादे षष्ठ्युपाख्याने श्री-प्रियव्रतविरचितं
श्री-षष्ठीदेवीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ प्रज्ञाविवर्धन-कार्तिकेय-स्तोत्रम् ॥

स्कन्द उवाच

योगीश्वरो महासेनः कार्तिकेयोऽग्निनन्दनः।
स्कन्दः कुमारः सेनानीः स्वामी शङ्करसम्भवः ॥ १ ॥

गाङ्गेयस्ताम्रचूडश्च ब्रह्मचारी शिखिध्वजः।
तारकारिरुमापुत्रः क्रौञ्चारिश्च षडाननः ॥ २ ॥

शब्दब्रह्मसमुद्रश्च सिद्धः सारस्वतो गुहः।
सनत्कुमारो भगवान् भोगमोक्षफलप्रदः ॥ ३ ॥

शरजन्मा गणाधीशपूर्वजो मुक्तिमार्गकृत्।
सर्वागमप्रणेता च वाञ्छितार्थप्रदायकः ॥ ४ ॥

अष्टाविंशतिनामानि मदीयानीति यः पठेत्।
प्रत्यूषं श्रद्धया युक्तो मूको वाचस्पतिर्भवेत् ॥ ५ ॥

महामन्त्रमयानीति मम नामानुकीर्तनम्।
महाप्रज्ञामवाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ॥ ६ ॥

पुष्यनक्षत्रम् आरभ्य दशवारं पठेन्नरः।
पुष्यनक्षत्र-पर्यन्तेऽश्वत्थमूले दिने दिने।
पुरश्चरण-मात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ७ ॥

॥ इति श्री-रुद्रयामलरहस्ये प्रज्ञाविवर्धन-कार्तिकेय-
स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



॥ विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ १ ॥

यस्य द्विरदवक्राद्याः पारिषद्याः परः शतम्।
विघ्नं निघ्नन्ति सततं विष्वक्सेनं तमाश्रये ॥ २ ॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥ ३ ॥

व्यासं वसिष्ठनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम्।
पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम् ॥ ४ ॥

व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः ॥ ५ ॥

अविकाराय शुद्धाय नित्याय परमात्मने।
सदैकरूपरूपाय विष्णवे सर्वजिष्णवे ॥ ६ ॥

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात्।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ ७ ॥

ॐ नमो विष्णवे प्रभविष्णवे

श्री-वैशम्पायन उवाच

श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥ ८ ॥

श्री-युधिष्ठिर उवाच

किमेकं दैवतं लोके किं वाऽप्येकं परायणम्।
स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥ ९ ॥

को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः।
किं जपन् मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ॥ १० ॥

श्री-भीष्म उवाच

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम्।
स्तुवन् नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥ ११ ॥
तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम्।
ध्यायन् स्तुवन् नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥ १२ ॥
अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम्।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥ १३ ॥
ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम्।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥ १४ ॥
एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चयन्नरः सदा ॥ १५ ॥
परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम् ॥ १६ ॥
पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम्।
दैवतं दैवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता ॥ १७ ॥
यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥ १८ ॥
तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते।
विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहम् ॥ १९ ॥

यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये ॥ २० ॥

ऋषिर्नाम्नां सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः।
छन्दोऽनुष्टुप् तथा देवो भगवान् देवकीसुतः ॥ २१ ॥

अमृतांशूद्भवो बीजं शक्तिर्देवकिनन्दनः।
त्रिसामा हृदयं तस्य शान्त्यर्थं विनियुज्यते ॥ २२ ॥

विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्।
अनेकरूपदैत्यान्तं नमामि पुरुषोत्तमम् ॥ २३ ॥

॥ पूर्वन्यासः ॥

अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य।
श्री-वेदव्यासो भगवान् ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः।
श्रीमहाविष्णुः परमात्मा श्रीमन्नारायणो देवता।
अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम्। देवकीनन्दनः स्त्रष्टेति शक्तिः।

उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मन्त्रः।

शङ्खभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम्।

शार्ङ्गधन्वा गदाधर इत्यस्त्रम्।

रथाङ्गपाणिरक्षोभ्य इति नेत्रम्।

त्रिसामा सामगः सामेति कवचम्।

आनन्दं परब्रह्मेति योनिः।

ऋतुः सुदर्शनः काल इति दिग्बन्धः।

श्रीविश्वरूप इति ध्यानम्।

श्रीमहाविष्णुप्रीत्यर्थं सहस्रनामजपे विनियोगः ॥

॥ ध्यानम् ॥

क्षीरोदन्वत्प्रदेशे शुचिमणिविलसत्सैकतेमौक्तिकानाम्
मालाक्लृप्तासनस्थः स्फटिकमणिनिभैर्मौक्तिकैर्मण्डिताङ्गः ।

शुभ्रैरभ्रैरदभ्रैरुपरिविरचितैर्मुक्तपीयूषवर्षैः

आनन्दी नः पुनीयादरिनलिनगदाशङ्खपाणिर्मुकुन्दः ॥ १ ॥

भूः पादौ यस्य नाभिर्वियदसुरनिलश्चन्द्रसूर्यौ च नेत्रे
कर्णावाशाः शिरो द्यौर्मुखमपि दहनो यस्य वास्तेयमब्धिः ।

अन्तःस्थं यस्य विश्वं सुरनरखगगोभोगिगन्धर्वदैत्यैः

चित्रं रंरम्यते तं त्रिभुवनवपुषं विष्णुमीशं नमामि ॥ २ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिहृद्गुह्यगम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥ ३ ॥

मेघश्यामं पीतकौशेयवासम्
श्रीवत्साङ्गं कौस्तुभोद्भासिताङ्गम् ।
पुण्योपेतं पुण्डरीकायताक्षम्
विष्णुं वन्दे सर्वलोकैकनाथम् ॥ ४ ॥

नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते ।
अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ ५ ॥

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलम्
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।

सहारवक्षःस्थलशोभिकौस्तुभम्
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ॥ ६ ॥

छायायां पारिजातस्य हेमसिंहासनोपरि
 आसीनमम्बुदश्याममायताक्षमलङ्कृतम् ।
 चन्द्राननं चतुर्बाहुं श्रीवत्साङ्कितवक्षसम्
 रुक्मिणीसत्यभामाभ्यां सहितं कृष्णमाश्रये ॥ ७ ॥

॥ हरिः ॐ ॥

॥ विश्वस्मै नमः ॥

विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ।
 भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥ १ ॥
 पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः ।
 अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥ २ ॥
 योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः ।
 नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ॥ ३ ॥
 सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः ।
 सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥ ४ ॥
 स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः ।
 अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः ॥ ५ ॥
 अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।
 विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥ ६ ॥
 अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः ।
 प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम् ॥ ७ ॥
 ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
 हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥ ८ ॥

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।
 अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥ ९ ॥
 सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेता प्रजाभवः ।
 अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥ १० ॥
 अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः ।
 वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः ॥ ११ ॥
 वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्माऽसम्मितः समः ।
 अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥ १२ ॥
 रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः ।
 अमृतः शाश्वतः स्थाणुर्वरारोहो महातपाः ॥ १३ ॥
 सर्वगः सर्वविद्वानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः ।
 वेदो वेदविद्व्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित् कविः ॥ १४ ॥
 लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः ।
 चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥ १५ ॥
 भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः ।
 अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥ १६ ॥
 उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः ।
 अतीन्द्रः सङ्ग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः ॥ १७ ॥
 वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः ।
 अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः ॥ १८ ॥
 महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः ।
 अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥ १९ ॥

महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः ॥ २० ॥

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः।
हिरण्यनाभः सुतपा पद्मनाभः प्रजापतिः ॥ २१ ॥

अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान् स्थिरः।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥ २२ ॥

गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥ २३ ॥

अग्रणीग्रामणीः श्रीमान् न्यायो नेता समीरणः।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ २४ ॥

आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः।
अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ॥ २५ ॥

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥ २६ ॥

असङ्ख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः।
सिद्धार्थः सिद्धसङ्कल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥ २७ ॥

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः ॥ २८ ॥

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः।
नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः ॥ २९ ॥

ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥ ३० ॥

अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिन्दुः सुरेश्वरः ।

औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥ ३१ ॥

भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः ।

कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥ ३२ ॥

युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः ।

अदृश्यो व्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥ ३३ ॥

इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः ।

क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥ ३४ ॥

अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।

अपान्निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥ ३५ ॥

स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ।

वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः ॥ ३६ ॥

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः ।

अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥ ३७ ॥

पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत् ।

महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ॥ ३८ ॥

अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ।

सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिञ्जयः ॥ ३९ ॥

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः ।

महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥ ४० ॥

उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ।

करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥ ४१ ॥

व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः ।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥ ४२ ॥

रामो विरामो विरतो मार्गो नेयो नयोऽनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥ ४३ ॥

वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरघोक्षजः ॥ ४४ ॥

ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः ।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥ ४५ ॥

विस्तारः स्थावरः स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् ।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥ ४६ ॥

अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयूपो महामखः ।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥ ४७ ॥

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥ ४८ ॥

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत् ।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥ ४९ ॥

स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत् ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥ ५० ॥

धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम् ।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥ ५१ ॥

गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ॥ ५२ ॥

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।

शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः ॥ ५३ ॥

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित् पुरुसत्तमः ।

विनयो जयः सत्यसन्धो दाशार्हः सात्त्वतां पतिः ॥ ५४ ॥

जीवो विनयितासाक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः ।

अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः ॥ ५५ ॥

अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।

आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ॥ ५६ ॥

महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।

त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गः कृतान्तकृत् ॥ ५७ ॥

महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी ।

गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥ ५८ ॥

वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः सङ्कर्षणोऽच्युतः ।

वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः ॥ ५९ ॥

भगवान् भगहाऽऽनन्दी वनमाली हलायुधः ।

आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥ ६० ॥

सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ।

दिवःस्पृक् सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ॥ ६१ ॥

त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक् ।

सन्न्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम् ॥ ६२ ॥

शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ।

गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥ ६३ ॥

अनिवर्ती निवृत्तात्मा सङ्क्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः।

श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः ॥ ६४ ॥

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः।

श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः ॥ ६५ ॥

स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिज्योतिर्गणेश्वरः।

विजितात्माऽविधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥ ६६ ॥

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतः स्थिरः।

भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः ॥ ६७ ॥

अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः।

अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥ ६८ ॥

कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः।

त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥ ६९ ॥

कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः।

अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनञ्जयः ॥ ७० ॥

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्-ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः।

ब्रह्मविद्-ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः ॥ ७१ ॥

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः।

महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥ ७२ ॥

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः।

पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥ ७३ ॥

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः।

वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥ ७४ ॥

सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः ।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ॥ ७५ ॥

भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः ॥ ७६ ॥

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥ ७७ ॥

एको नैकः सवः कः किं यत् तत्पदमनुत्तमम् ।
लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥ ७८ ॥

सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी ।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः ॥ ७९ ॥

अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक् ।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥ ८० ॥

तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकश्चङ्गो गदाग्रजः ॥ ८१ ॥

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥ ८२ ॥

समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥ ८३ ॥

शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः ।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥ ८४ ॥

उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः ।
अर्को वाजसनः शृङ्गी जयन्तः सर्वविजयी ॥ ८५ ॥

सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः।

महाहृदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥ ८६ ॥

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः।

अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥ ८७ ॥

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः।

न्यग्रोधोऽदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ॥ ८८ ॥

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः।

अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥ ८९ ॥

अणुर्वृहत् कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणो महान्।

अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्धनः ॥ ९० ॥

भारभृत् कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः।

आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः ॥ ९१ ॥

धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः।

अपराजितः सर्वसहो नियन्ताऽनियमोऽयमः ॥ ९२ ॥

सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः।

अभिप्रायः प्रियाहोऽर्हः प्रियकृत् प्रीतिवर्धनः ॥ ९३ ॥

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः।

रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥ ९४ ॥

अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः।

अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥ ९५ ॥

सनात् सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः।

स्वस्तिदः स्वस्तिकृत् स्वस्ति स्वस्तिभुक् स्वस्तिदक्षिणः ॥ ९६ ॥

अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः ।
 शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः ॥ ९७ ॥
 अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः ।
 विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ ९८ ॥
 उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ।
 वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः ॥ ९९ ॥
 अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।
 चतुरश्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः ॥ १०० ॥
 अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः ।
 जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥ १०१ ॥
 आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
 ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥ १०२ ॥
 प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत् प्राणजीवनः ।
 तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥ १०३ ॥
 भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः ।
 यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः ॥ १०४ ॥
 यज्ञभृद्-यज्ञकृद्-यज्ञी यज्ञभुग्-यज्ञसाधनः ।
 यज्ञान्तकृद्-यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥ १०५ ॥
 आत्मयोनिः स्वयञ्जातो वैखानः सामगायनः ।
 देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः ॥ १०६ ॥
 शङ्खभृन्नन्दकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
 रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥ १०७ ॥

सर्वप्रहरणायुध ॐ नम इति।

वनमाली गदी शार्ङ्गी शङ्खी चक्री च नन्दकी।
श्रीमान् नारायणो विष्णुर्वासुदेवोऽभिरक्षतु ॥ १०८ ॥

श्री-वासुदेवोऽभिरक्षतु ॐ नम इति।

॥ फलश्रुति श्लोकाः ॥

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः।

नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥ १ ॥

य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत्।

नाशुभं प्राप्नुयात् किञ्चित् सोऽमुत्रेह च मानवः ॥ २ ॥

वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात् क्षत्रियो विजयी भवेत्।

वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात् ॥ ३ ॥

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात्।

कामानवाप्नुयात् कामी प्रजार्थी चाऽऽप्नुयात्प्रजाम् ॥ ४ ॥

भक्तिमान् यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः।

सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत् प्रकीर्तयेत् ॥ ५ ॥

यशः प्राप्नोति विपुलं याति प्राधान्यमेव च।

अचलां श्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ॥ ६ ॥

न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विन्दति।

भवत्यरोगो द्युतिमान् बलरूपगुणान्वितः ॥ ७ ॥

रोगार्तो मुच्यते रोगाद्वद्धो मुच्येत बन्धनात्।

भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येताऽऽपन्न आपदः ॥ ८ ॥

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम्।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥ ९ ॥

वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ॥ १० ॥

न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित्।
जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥ ११ ॥

इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः।
युज्येताऽऽत्मसुखक्षान्तिश्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभिः ॥ १२ ॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥ १३ ॥

द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः ॥ १४ ॥

ससुरासुरगन्धर्व सयक्षोरगराक्षसम्।
जगद्वशे वर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम् ॥ १५ ॥

इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः सत्त्वं तेजो बलं धृतिः।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च ॥ १६ ॥

सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते।
आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥ १७ ॥

ऋषयः पितरो देवा महाभूतानि धातवः।
जङ्गमाजङ्गमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम् ॥ १८ ॥

योगो ज्ञानं तथा साङ्ख्यं विद्याः शिल्पादि कर्म च।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात् ॥ १९ ॥

एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः।
त्रील्लोकान् व्याप्य भूतात्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्ययः ॥ २० ॥

इमं स्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम्।
पठेद्य इच्छेत् पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानि च ॥ २१ ॥
विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभुमव्ययम्।
भजन्ति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ॥ २२ ॥

न ते यान्ति पराभवम् ॐ नम इति।

अर्जुन उवाच

पद्मपत्रविशालाक्ष पद्मनाभ सरोत्तम।
भक्तानामनुरक्तानां त्राता भव जनार्दन ॥ २३ ॥

श्रीभगवानुवाच

यो मां नामसहस्रेण स्तोतुमिच्छति पाण्डव।
सोऽहमेकेन श्लोकेन स्तुत एव न संशयः ॥ २४ ॥

स्तुत एव न संशय ॐ नम इति।

व्यास उवाच

वासनाद्वासुदेवस्य वासितं भुवनत्रयम्।
सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते ॥ २५ ॥

श्री-वासुदेव नमोऽस्तुत ॐ नम इति।

पार्वत्युवाच

केनोपायेन लघुना विष्णोर्नामसहस्रकम्।
पठ्यते पण्डितैर्नित्यं श्रोतुमिच्छाम्यहं प्रभो ॥ २६ ॥

श्री-ईश्वर उवाच

श्रीराम राम रामेति रमे रामे मनोरमे।
सहस्रनाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने ॥ २७ ॥

श्रीरामनाम वरानन ॐ नम इति।

ब्रह्मोवाच

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे।
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटियुगधारिणे नमः ॥ २८ ॥

सहस्रकोटियुगधारिणे नम ॐ नम इति।

सञ्जय उवाच

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ २९ ॥

श्रीभगवानुवाच

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ ३० ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥ ३१ ॥

आर्ता विषण्णाः शिथिलाश्च भीताः
घोरेषु च व्याधिषु वर्तमानाः।
सङ्कीर्त्य नारायणशब्दमात्रम्
विमुक्तदुःखाः सुखिनो भवन्ति ॥ ३२ ॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥

॥ ॐ तत्सदिति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां
वैयासिक्याम् आनुशासनिकपर्वणि श्री-भीष्मयुधिष्ठिरसंवादे
श्री-विष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



॥ महागणेशपञ्चरत्नम् ॥

मुदाकरात्तमोदकं सदाविमुक्तिसाधकम्
 कलाधरावतंसकं विलासिलोकरक्षकम्।
 अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकम्
 नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम् ॥ १ ॥

नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरम्
 नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम्।
 सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरम्
 महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम् ॥ २ ॥

समस्तलोकशङ्करं निरस्तदैत्यकुञ्जरम्
 दरेतरोदरं वरं वरेभवक्रमक्षरम्।
 कृपाकरं क्षमाकरं मुदाकरं यशस्करम्
 मनस्करं नमस्कृतां नमस्करोमि भास्वरम् ॥ ३ ॥

अकिञ्चनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनम्
 पुरारिपूर्वनन्दनं सुरारिगर्वचर्वणम्।
 प्रपञ्चनाशभीषणं धनञ्जयादिभूषणम्
 कपोलदानवारणं भजे पुराणवारणम् ॥ ४ ॥

नितान्तकान्तदन्तकान्तिमन्तकान्तकात्मजम्
 अचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनम्।
 हृदन्तरे निरन्तरं वसन्तमेव योगिनाम्
 तमेकदन्तमेव तं विचिन्तयामि सन्ततम् ॥ ५ ॥

महागणेशपञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहम्
प्रजल्पति प्रभातके हृदि स्मरन् गणेश्वरम्।
अरोगतामदोषतां सुसाहितीं सुपुत्रताम्
समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात्॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-महागणेशपञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥



॥ सूर्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

धौम्य उवाच

सूर्योऽर्यमा भगस्त्वष्टा पूषाऽर्कः सविता रविः ।
गभस्तिमानजः कालो मृत्युर्धाता प्रभाकरः ॥ १ ॥

पृथिव्यापश्च तेजश्च खं वायुश्च परायणम् ।
सोमो बृहस्पतिः शुक्रो बुधोऽङ्गारक एव च ॥ २ ॥

इन्द्रो विवस्वान् दीप्तांशुः शुचिः शौरिः शनैश्चरः ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणो यमः ॥ ३ ॥

वैद्युतो जाठरश्चाग्निरैन्धनस्तेजसां पतिः ।
धर्मध्वजो वेदकर्ता वेदाङ्गो वेदवाहनः ॥ ४ ॥

कृतं त्रेता द्वापरश्च कलिः सर्वमलाश्रयः ।
कलाकाष्ठामुहूर्तश्च क्षपा यामस्तथा क्षणः ॥ ५ ॥

संवत्सरकरोऽश्वत्थः कालचक्रो विभावसुः ।
पुरुषः शाश्वतो योगी व्यक्ताव्यक्तः सनातनः ॥ ६ ॥

कालाध्यक्षः प्रजाध्यक्षो विश्वकर्मा तमोनुदः ।
वरुणः सागरोंऽशुश्च जीमूतो जीवनोऽरिहा ॥ ७ ॥

भूताश्रयो भूतपतिः सर्वलोकनमस्कृतः ।
स्रष्टा संवर्तको वह्निः सर्वस्यादिरलोलुपः ॥ ८ ॥

अनन्तः कपिलो भानुः कामदः सर्वतोमुखः ।
जयो विशालो वरदः सर्वभूतनिषेवितः ॥ ९ ॥

मनः सुपर्णो भूतादिः शीघ्रगः प्राणधारकः।
धन्वतरिर्धूमकेतुरादिदेवोऽदितेः सुतः ॥ १० ॥

द्वादशात्माऽरविन्दाक्षः पिता माता पितामहः।
स्वर्गद्वारं प्रजाद्वारं मोक्षद्वारं त्रिविष्टपम् ॥ ११ ॥

देहकर्ता प्रशान्तात्मा विश्वात्मा विश्वतोमुखः।
चराचरात्मा सूक्ष्मात्मा मैत्रेयः करुणान्वितः ॥ १२ ॥

एतद्वै कीर्तनीयस्य सूर्यस्यामिततेजसः।
नामाष्टशतकं चेदं प्रोक्तमेतत् स्वयम्भुवा ॥ १३ ॥

सुरगणपितृयक्षसेवितं ह्यसुरनिशाचरसिद्धवन्दितम्।
वरकनकहुताशनप्रभं प्रणिपतितोऽस्मि हिताय भास्करम् ॥ १४ ॥

सूर्योदये यः सुसमाहितः पठेत्
स पुत्रदारान् धनरत्नसञ्चयान्।
लभेत् जातिस्मरतां नरः सदा
धृतिं च मेधां च स विन्दते पुमान् ॥ १५ ॥

इमं स्तवं देववरस्य यो नरः
प्रकीर्तयेच्छुद्धमनाः समाहितः।
विमुच्यते शोकदवाग्निसागरात्
लभेत् कामान् मनसा यथेप्सितान् ॥ १६ ॥

॥ इति श्रीमन्महाभारते वनपर्वणि धौम्ययुधिष्ठिरसंवादे
श्री-सूर्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः ॥

उद्यन्नद्य विवस्वानारोहन्नुत्तरां दिवं देवः।

हृद्रोगं मम सूर्यो हरिमाणं चाऽऽशु नाशयतु ॥ १ ॥

निमिषार्धेनैकेन द्वे च शते द्वे सहस्रे द्वे।

क्रममाण योजनानां नमोऽस्तु ते नलिननाथाय ॥ २ ॥

कर्म-ज्ञान-ख-दशकं मनश्च जीव इति विश्व-सर्गाय।

द्वादशधा यो विचरति स द्वादश-मूर्तिरस्तु मोदाय ॥ ३ ॥

त्वं हि यजुर्ऋक् साम त्वमागमस्त्वं वषट्कारः।

त्वं विश्वं त्वं हंसस्त्वं भानो परमहंसश्च ॥ ४ ॥

शिवरूपाज्ज्ञानमहं त्वत्तो मुक्तिं जनार्दनाकारात्।

शिखिरूपादैश्वर्यं त्वत्तश्चरोग्यमिच्छामि ॥ ५ ॥

त्वचि दोषा दृशि दोषा हृदि दोषा येऽखिलेन्द्रियज-दोषाः।

तान् पूषा हतदोषः किञ्चिद्रोषाग्निना दहतु ॥ ६ ॥

धर्मार्थ-काम-मोक्ष-प्रतिरोधानुग्र-ताप-वेग-करान् ।

बन्दी-कृतेन्द्रिय-गणान् गदान् विखण्डयतु चण्डांशुः ॥ ७ ॥

येन विनेदं तिमिरं जगदेत्य ग्रसति चरमचरमखिलम्।

धृतबोधं तं नलिनीभर्तारं हर्तारमापदामीडे ॥ ८ ॥

यस्य सहस्राभीशोरभीशु-लेशो हिमांशु-बिम्बगतः।

भासयति नक्तमखिलं भेदयतु विपद्-गणानरुणः ॥ ९ ॥

तिमिरमिव नेत्र-तिमिरं पटलमिवाशेष-रोग-पटलं नः।

काशमिवाधि-निकायं कालपिता रोगयुक्तां हरतात् ॥ १० ॥

वाताश्मरी-गदार्शस्त्वग्-दोष-महोदर-प्रमेहांश्च।
ग्रहणी-भगन्दराख्या महतीस्त्वं मे रुजो हंसि ॥ ११ ॥

त्वं माता त्वं शरणं त्वं धाता त्वं धनं त्वमाचार्यः।
त्वं त्राता त्वं हर्ता विपदामर्क प्रसीद मम भानो ॥ १२ ॥

इत्यार्या-द्वादशकं साम्बस्य पुरो नभःस्थलात् पतितम्।
पठतां भाग्य-समृद्धिः समस्त-रोग-क्षयश्च स्यात् ॥ १३ ॥

॥ इति श्री-द्वादशार्यासूर्यस्तुतिः सम्पूर्णा ॥



॥ शिवमानसपूजा ॥

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरम्
 नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्।
 जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
 दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ॥ १ ॥

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसम्
 भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।
 शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलम्
 ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥ २ ॥

छत्तं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलम्
 वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा।
 साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत् समस्तं मया
 सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ॥ ३ ॥

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहम्
 पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
 सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो-
 यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाऽऽराधनम् ॥ ४ ॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
 श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
 विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
 जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ

श्री-शिवमानसपूजा सम्पूर्णा ॥

॥ वैद्यनाथाष्टकम् ॥

श्रीराम-सौमित्रि-जटायु-वेद-षडाननादित्य-कुजार्चिताय ।
श्रीनीलकण्ठाय दयामयाय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय ॥ १ ॥

गङ्गाप्रवाहेन्दुजटाधराय त्रिलोचनाय स्मरकालहन्त्रे ।
समस्तदेवैरभिपूजिताय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय ॥ २ ॥

भक्तः प्रियाय त्रिपुरान्तकाय पिनाकिने दुष्टहराय नित्यम् ।
प्रत्यक्षलीलाय मनुष्यलोके श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय ॥ ३ ॥

प्रभूतवातादि-समस्तरोगप्रनाशकर्त्रे मुनिवन्दिताय ।
प्रभाकरेन्दुभ्रिविलोचनाय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय ॥ ४ ॥

वाक्श्रोत्रनेत्राङ्घ्रि-विहीनजन्तोर्वाक्श्रोत्रनेत्राङ्घ्रि-सुखप्रदाय ।
कुष्ठादिसर्वोन्नतरोगहन्त्रे श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय ॥ ५ ॥

वेदान्तवेद्याय जगन्मयाय योगीश्वरध्येयपदाम्बुजाय ।
त्रिमूर्तिरूपाय सहस्रनाम्ने श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय ॥ ६ ॥

स्वतीर्थमृद्भस्मभृताङ्गभाजां पिशाचदुःखार्तिभयापहाय ।
आत्मस्वरूपाय शरीरभाजां श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय ॥ ७ ॥

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय स्रग्गन्धभस्माद्यभिशोभिताय ।
सुपुत्रदारादिसुभाग्यदाय श्रीवैद्यनाथाय नमः शिवाय ॥ ८ ॥

बालाम्बिकेश वैद्येश भवरोगहरेति च ।
जपेन्नामत्रयं नित्यं महारोगनिवारणम् ॥

महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव ।
महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव महादेव ॥

॥ उमामहेश्वरस्तोत्रम् ॥

नमः शिवाभ्यां नवयौवनाभ्याम्
परस्पराश्लिष्टवपुर्धराभ्याम् ।
नगेन्द्रकन्यावृषकेतनाभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ १ ॥

नमः शिवाभ्यां सरसोत्सवाभ्याम्
नमस्कृताभीष्टवरप्रदाभ्याम् ।
नारायणेनार्चितपादुकाभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ २ ॥

नमः शिवाभ्यां वृषवाहनाभ्याम्
विरिञ्चिविष्ण्वन्द्रसुपूजिताभ्याम् ।
विभूतिपाटीरविलेपनाभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ ३ ॥

नमः शिवाभ्यां जगदीश्वराभ्याम्
जगत्पतिभ्यां जयविग्रहाभ्याम् ।
जम्भारिमुख्यैरभिवन्दिताभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ ४ ॥

नमः शिवाभ्यां परमौषधाभ्याम्
पञ्चाक्षरी-पञ्जररञ्जिताभ्याम् ।
प्रपञ्च-सृष्टि-स्थिति-संहताभ्याम्
नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ ५ ॥

नमः शिवाभ्यामतिसुन्दराभ्याम्
 अत्यन्तमासक्तहृदम्बुजाभ्याम्।
 अशेषलोकैकहितङ्कराभ्याम्
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥ ६ ॥

नमः शिवाभ्यां कलिनाशनाभ्याम्
 कङ्कालकल्याणवपुर्धराभ्याम्।
 कैलासशैलस्थितदेवताभ्याम्
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥ ७ ॥

नमः शिवाभ्यामशुभापहाभ्याम्
 अशेषलोकैकविशेषिताभ्याम्।
 अकुण्ठिताभ्यां स्मृतिसम्भृताभ्याम्
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥ ८ ॥

नमः शिवाभ्यां रथवाहनाभ्याम्
 रवीन्दुवैश्वानरलोचनाभ्याम्।
 राका-शशाङ्काभ-मुखाम्बुजाभ्याम्
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥ ९ ॥

नमः शिवाभ्यां जटिलन्धराभ्याम्
 जरामृतिभ्यां च विवर्जिताभ्याम्।
 जनार्दनाब्जोद्भवपूजिताभ्याम्
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥ १० ॥

नमः शिवाभ्यां विषमेक्षणाभ्याम्
 बिल्वच्छदामल्लिकदामभृद्भ्याम्।
 शोभावती-शान्तवतीश्वराभ्याम्
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम्॥ ११ ॥

नमः शिवाभ्यां पशुपालकाभ्याम्
 जगत्त्रयीरक्षण-बद्धहृद्भ्याम् ।
 समस्तदेवासुरपूजिताभ्याम्
 नमो नमः शङ्करपार्वतीभ्याम् ॥ १२ ॥

स्तोत्रं त्रिसन्ध्यं शिवपार्वतीभ्याम्
 भक्त्या पठेद्-द्वादशकं नरो यः ।
 स सर्वसौभाग्य-फलानि भुङ्क्ते
 शतायुरन्ते शिवलोकमेति ॥ १३ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-उमामहेश्वरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



॥ ललितापञ्चरत्नम् ॥

प्रातः स्मरामि ललितावदनारविन्दम्
 बिम्बाधरं पृथुलमौक्तिकशोभिनासम्।
 आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यम्
 मन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वलभालदेशम् ॥ १ ॥

प्रातर्भजामि ललिताभुजकल्पवल्लीम्
 रत्नाङ्गुलीयलसदङ्गुलिपल्लवाढ्याम्।
 माणिक्यहेमवलयार्ङ्गदशोभमानाम्
 पुण्ड्रेक्षुचापकुसुमेषुसृणीर्दधानाम् ॥ २ ॥

प्रातर्नमामि ललिताचरणारविन्दम्
 भक्तेष्टदाननिरतं भवसिन्धुपोतम्।
 पद्मासनादिसुरनायकपूजनीयम्
 पद्माङ्कुशध्वजसुदर्शनलाञ्छनाढ्यम् ॥ ३ ॥

प्रातः स्तुवे परशिवां ललितां भवानीम्
 त्रय्यन्तवेद्यविभवां करुणानवद्याम्।
 विश्वस्य सृष्टिविलयस्थितिहेतुभूताम्
 विश्वेश्वरीं निगमवाङ्मनसातिदूराम् ॥ ४ ॥

प्रातर्वदामि ललिते तव पुण्यनाम
 कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति।
 श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति
 वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति ॥ ५ ॥

यः श्लोकपञ्चकमिदं ललिताम्बिकायाः
 सौभाग्यदं सुललितं पठति प्रभाते।
 तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना
 विद्यां श्रियं विमलसौख्यमनन्तकीर्तिम्॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-ललितापञ्चरत्नं सम्पूर्णम्॥

॥ मूकसारः ॥

॥ १-आर्याशतके ॥

[कारण-पर-चिद्रूपा काञ्चीपुर-सीम्नि कामपीठगता।
 काचन विहरति करुणा काश्मीर-स्तवक-कोमलाङ्गलता] ॥ १ ॥ १-१

कुण्डलि कुमारि कुटिले चण्डि चराचर-सवित्रि चामुण्डे।
 गुणिनि गुहारिणि गुह्ये गुरुमूर्ते त्वां नमामि कामाक्षि॥ २ ॥ १-४६

अभिदाकृतिर्भिदाकृतिरचिदाकृतिरपि चिदाकृतिर्मातः।
 अनहन्ता त्वमहन्ता भ्रमयसि कामाक्षि शाश्वती विश्वम्॥ ३ ॥ १-४७

काम-परिपन्थि-कामिनि कामेश्वरि काम-पीठ-मध्य-गते।
 काम-दुघा भव कमले काम-कले कामकोटि कामाक्षि॥ ४ ॥ १-४८

लीये पुर-हर-जाये माये तव तरुण-पल्लव-च्छाये।
 चरणे चन्द्रा-भरणे काञ्ची-शरणे नतार्ति-संहरणे॥ ५ ॥ १-७२

स्मर-मथन-वरण-लोला मन्मथ-हेला-विलास-मणि-शाला।
 कनक-रुचि-चौर्य-शीला त्वमम्ब बाला कराब्ज-धृत-माला॥ ६ ॥ १-७३

अन्तरपि बहिरपि त्वं जन्तुततेरन्तकान्तकृदहन्ते।
चिन्तितसन्तानवतां सन्ततमपि तन्तनीषि महिमानम् ॥ ७ ॥ १-९८

[जय जय जगदम्ब शिवे
जय जय कामाक्षि जय जयाद्रिसुते।
जय जय महेशदयिते
जय जय चिद्गगनकौमुदीधारे] ॥ ८ ॥ १-१००

॥ २-पादारविन्दशतके ॥

जपालक्ष्मीशोणो जनितपरमज्ञाननलिनी-
विकासव्यासङ्गो विफलितजगज्जाड्यगरिमा।
मनःपूर्वाद्रिं मे तिलकयतु कामाक्षि तरसा
तमस्काण्डद्रोही तव चरणपाथोजरमणः ॥ ९ ॥ २-१७

गिरां दूरौ चोरौ जडिमतिमिराणां कृतजगत्
परित्राणौ शोणौ मुनिहृदयलीलैकनिपुणौ।
नखैः स्मेरौ सारौ निगमवचसां खण्डितभव-
ग्रहोन्मादौ पादौ तव जननि कामाक्षि कलये ॥ १० ॥ २-४४

भवाम्भोधौ नौकां जडिमविपिने पावकशिखाम्
अमर्त्येन्द्रादीनामधिमुकुटमुत्तंसकलिकाम् ।
जगत्तापे ज्योत्स्नामकृतकवचःपञ्जरपुटे
शुक्लीं कामाक्ष्या मनसि कलये पादयुगलीम् ॥ ११ ॥ २-४९

कवित्वश्रीमिश्रीकरणनिपुणौ रक्षणचणौ
विपन्नानां श्रीमन्नलिनमसृणौ शोणकिरणौ।
मुनीन्द्राणामन्तःकरणशरणौ मन्दसरणौ
मनोज्ञौ कामाक्ष्या दुरितहरणौ नौमि चरणौ ॥ १२ ॥ २-७३

परस्मात्सर्वस्मादपि च परयोर्मुक्तिकरयोः
 नखश्रीभिर्ज्योत्स्नाकलिततुलयोस्ताम्रतलयोः ।
 निलीये कामाक्ष्या निगमनुतयोर्नाकिनतयोः
 निरस्तप्रोन्मीलन्नलिनमदयोरेव पदयोः ॥ १३ ॥ २-७४

रणन्मञ्जीराभ्यां ललितगमनाभ्यां सुकृतिनाम्
 मनोवास्तव्याभ्यां मथिततिमिराभ्यां नखरुचा ।
 निधेयाभ्यां पत्या निजशिरसि कामाक्षि सततम्
 नमस्ते पादाभ्यां नलिनमृदुलाभ्यां गिरिसुते ॥ १४ ॥ २-९६

यशः सूते मातर्मधुरकवितां पक्ष्मलयते
 श्रियं दत्ते चित्ते कमपि परिपाकं प्रथयते ।
 सतां पाशग्रन्थिं शिथिलयति किं किं न कुरुते
 प्रपन्ने कामाक्ष्याः प्रणतिपरिपाटी चरणयोः ॥ १५ ॥ २-९९

मनीषां माहेन्द्रिं ककुभमिव ते कामपि दशाम्
 प्रधत्ते कामाक्ष्याश्चरणतरुणादित्यकिरणः ।
 यदीये सम्पर्के धृतरसमरन्दा कवयताम्
 परीपाकं धत्ते परिमलवती सूक्तिनलिनी ॥ १६ ॥ २-१००

॥ ३-स्तुतिशतके ॥

राकाचन्द्रसमानकान्तिवदना नाकाधिराजस्तुता
 मूकानामपि कुर्वती सुरधुनीनीकाशवाग्वैभवम् ।
 श्रीकाञ्चीनगरीविहाररसिका शोकापहन्त्री सताम्
 एका पुण्यपरम्परा पशुपतेराकारिणी राजते ॥ १७ ॥ ३-११

जाता शीतल-शैलतः सुकृतिनां दृश्या परं देहिनां
 लोकानां क्षण-मात्र-संस्मरणतः सन्ताप-विच्छेदिनी।
 आश्चर्यं बहु खेलनं वितनुते नैश्वल्य-माबिभ्रती
 कम्पायास्तट-सीम्नि काऽपि तटिनी कारुण्य-पाथोमयी ॥ १८ ॥ ३-१२
 वरीवर्तु स्थेमा त्वयि मम गिरां देवि मनसो
 नरीनर्तु प्रौढा वदनकमले वाक्यलहरी।
 चरीचर्तु प्रज्ञाजननि जडिमानः परजने
 सरीसर्तु स्वैरं जननि मयि कामाक्षि करुणा ॥ १९ ॥ ३-४८
 परा विद्या हृद्याश्रितमदनविद्या मरकत-
 प्रभानीला लीलापरवशितशूलायुधमनाः।
 तमःपूरं दूरं चरणनतपौरन्दरपुरी-
 मृगाक्षी कामाक्षी कमलतरलाक्षी नयतु मे ॥ २० ॥ ३-५६
 यस्या वाटी हृदयकमलं कौसुमी योगभाजाम्
 यस्याः पीठी सततशिशिरा शीकरैर्माकरन्दैः।
 यस्याः पेटी श्रुतिपरिचलन्मौलिरत्नस्य काञ्ची
 सा मे सोमाभरणमहिषी साधयेत्काङ्क्षितानि ॥ २१ ॥ ३-७७
 परामृतझरीप्लुता जयति नित्यमन्तश्चरी
 भुवामपि बहिश्चरी परमसंविदेकात्मिका।
 महद्भिरपरोक्षिता सततमेव काञ्चीपुरे
 ममान्वहमहम्मतिर्मनसि भातु माहेश्वरी ॥ २२ ॥ ३-९०
 चराचरजगन्मयीं सकलहृन्मयीं चिन्मयीम्
 गुणत्रयमयीं जगत्त्रयमयीं त्रिधामामयीम्।
 परापरमयीं सदा दशदिशां निशाहर्मयीम्
 परां सततसन्मयीं मनसि चिन्मयीं शीलये ॥ २३ ॥ ३-९७

भुवनजननि भूषाभूतचन्द्रे नमस्ते
 कलुषशमनि कम्पातीरगेहे नमस्ते।
 निखिलनिगमवेद्ये नित्यरूपे नमस्ते
 परशिवमयि पाशच्छेदहस्ते नमस्ते ॥ २४ ॥ ३-९९

समरविजयकोटी साधकानन्दघाटी
 मृदुगुणपरिपेटी मुख्यकादम्बवाटी।
 मुनिनुतपरिपाटी मोहिताजाण्डकोटी
 परमशिववधूटी पातु मां कामकोटी ॥ २५ ॥ ३-१०१

॥ ४-कटाक्षशतके ॥

मातर्जयन्ति ममता-ग्रह-मोक्षणानि
 माहेन्द्र-नील-रुचि-शिक्षण-दक्षिणानि।
 कामाक्षि कल्पित-जगत्त्रय-रक्षणानि
 त्वद्वीक्षणानि वरदान-विचक्षणानि ॥ २६ ॥ ४-२

नीलोऽपि रागमधिकं जनयन्पुरारेः
 लोलोऽपि भक्तिमधिकां दृढयन्नराणाम्।
 वक्रोऽपि देवि नमतां समतां वितन्वन्
 कामाक्षि नृत्यतु मयि त्वदपाङ्गपातः ॥ २७ ॥ ४-१६

अत्यन्त-शीतलमतन्द्रयतु क्षणार्धम्
 अस्तोक-विभ्रममनङ्गविलासकन्दम्।
 अल्प-स्मितादृतमपारकृपाप्रवाहम्
 अक्षि-प्ररोहमचिरान्मयि कामकोटि ॥ २८ ॥ ४-२४

मातः क्षणं स्त्रपय मां तव वीक्षितेन
 मन्दाक्षितेन सुजनैरपरोक्षितेन।
 कामाक्षि कर्म-तिमिरोत्कर-भास्करेण
 श्रेयस्करेण मधुप-द्युति-तस्करेण ॥ २९ ॥ ४-४५

कैवल्यदाय करुणारसकिङ्कराय
 कामाक्षि कन्दलितविभ्रमशङ्कराय।
 आलोकनाय तव भक्तशिवङ्कराय
 मातर्नमोऽस्तु परतन्त्रितशङ्कराय ॥ ३० ॥ ४-४७

संसारघर्मपरितापजुषां नराणाम्
 कामाक्षि शीतलतराणि तवेक्षितानि।
 चन्द्रातपन्ति घनचन्दनकर्दमन्ति
 मुक्तागुणन्ति हिमवारिनिषेचनन्ति ॥ ३१ ॥ ४-७७

बाणेन पुष्पधनुषः परिकल्प्यमान-
 त्राणेन भक्तमनसां करुणाकरेण।
 कोणेन कोमलदृशस्तव कामकोटि
 शोणेन शोषय शिवे मम शोकसिन्धुम् ॥ ३२ ॥ ४-९४

अज्ञातभक्तिरसमप्रसरद्विवेकम्
 अत्यन्तगर्वमनधीतसमस्तशास्त्रम् ।
 अप्राप्तसत्यमसमीपगतं च मुक्तेः
 कामाक्षि मामवतु ते करुणाकटाक्षः ॥ ३३ ॥ ४-१००

॥ ५-मन्दस्मितशतके ॥

कपूरैरमृतैर्जगज्जननि ते कामाक्षि चन्द्रातपैः

मुक्ताहारगुणैर्मृणालवलयैर्मुग्धस्मितश्रीरियम् ।

श्रीकाञ्चीपुरनायिके समतया संस्तूयते सज्जनैः

तत्तादृङ्मम तापशान्तिविधये किं देवि मन्दायते ॥ ३४ ॥ ५-२४

चेतः शीतलयन्तु नः पशुपतेरानन्दजीवातवो

नम्राणां नयनाध्वसीमसु शरच्चन्द्रातपोपक्रमाः ।

संसारख्यसरोरुहाकरखलीकारे तुषारोत्कराः

कामाक्षि स्मरकीर्तिबीजनिकरास्त्वन्मन्दहासाङ्कुराः ॥ ३५ ॥ ५-३१

सूतिः श्वेतिमकन्दलस्य वसतिः शृङ्गारसारश्रियः

पूर्तिः सूक्तिझरीरसस्य लहरी कारुण्यपाथोनिधेः ।

वाटी काचन कौसुमी मधुरिमस्वाराज्यलक्ष्म्यास्तव

श्रीकामाक्षि ममास्तु मङ्गलकरी हासप्रभाचातुरी ॥ ३६ ॥ ५-८५

इन्धाने भववीतिहोत्रनिवहे कर्मौघचण्डानिल-

प्रौढिम्ना बहुलीकृते निपतितं सन्तापचिन्ताकुलम् ।

मातर्मा परिषिञ्च किञ्चिदमलैः पीयूषवर्षैरिव

श्रीकामाक्षि तव स्मितद्युतिकणैः शैशिर्यलीलाकरैः ॥ ३७ ॥ ५-९४

क्रीडालोलकृपासरोरुहमुखीसौधाङ्गणेभ्यः कवि-

श्रेणीवाक्परिपाटिकामृतझरीसूतीगृहेभ्यः शिवे ।

निर्वाणाङ्कुरसार्वभौमपदवीसिंहासनेभ्यस्तव

श्रीकामाक्षि मनोज्ञमन्दहसितज्योतिष्कणेभ्यो नमः ॥ ३८ ॥ ५-१००

आर्यामेव विभावयन् मनसि यः पादारविन्दं पुरः
 पश्यन्नारभते स्तुतिं स नियतं लब्ध्वा कटाक्ष-च्छविम्।
 कामाक्ष्या मृदुल-स्मितांशु-लहरी-ज्योत्स्ना-वयस्यान्विताम्
 आरोहत्यपवर्ग-सौध-वलभीमानन्द-वीची-मयीम् ॥ ३९ ॥ ५-१०१

॥ इति श्री-काञ्चीजगद्गुरु-श्री-चन्द्रशेखरेन्द्रसरस्वती-श्रीचरणैः
 श्री-मूकमहाकविप्रणीतायाः मूकपञ्चशत्याः सङ्ग्रहीतं मूकसारः
 सम्पूर्णः ॥



॥ सुब्रह्मण्यभुजङ्गम् ॥

सदा बालरूपाऽपि विघ्नाद्रिहन्त्री
 महादन्तिवक्राऽपि पञ्चास्यमान्या।
 विधीन्द्रादिमृग्या गणेशाभिधा मे
 विधत्तां श्रियं काऽपि कल्याणमूर्तिः ॥ १ ॥

न जानामि शब्दं न जानामि चार्थम्
 न जानामि पद्यं न जानामि गद्यम्।
 चिदेका षडास्या हृदि द्योतते मे
 मुखान्निस्सरन्ते गिरश्चापि चित्रम् ॥ २ ॥

मयूराधिरूढं महावाक्यगूढम्
 मनोहारिदेहं महच्चित्तगेहम्।
 महीदेवदेवं महावेदभावम्
 महादेवबालं भजे लोकपालम् ॥ ३ ॥

यदा सन्निधानं गता मानवा मे
 भवाम्भोधिपारं गतास्ते तदैव।
 इति व्यञ्जयन् सिन्धुतीरे य आस्ते
 तमीडे पवित्रं पराशक्तिपुत्रम् ॥ ४ ॥

यथाब्धेस्तरङ्गा लयं यान्ति तुङ्गास्-
 तथैवापदः सन्निधौ सेवतां मे।
 इतीवोर्मिपङ्कीर्णानां दर्शयन्तम्
 सदा भावये हृत्सरोजे गुहं तम् ॥ ५ ॥

गिरौ मन्निवासे नरा येऽधिरूढास्-
 तदा पर्वते राजते तेऽधिरूढाः।
 इतीव ब्रुवन् गन्धशैलाधिरूढः
 स देवो मुदे मे सदा षण्मुखोऽस्तु॥ ६ ॥
 महाम्भोधितीरे महापापचोरे
 मुनीन्द्रानुकूले सुगन्धारव्यशैले।
 गुहायां वसन्तं स्वभासा लसन्तम्
 जनार्तिं हरन्तं श्रयामो गुहं तम्॥ ७ ॥
 लसत्स्वर्णगेहे नृणां कामदोहे
 सुमस्तोमसञ्छन्नमाणिक्यमञ्चे।
 समुद्यत्सहस्रार्कतुल्यप्रकाशम्
 सदा भावये कार्तिकेयं सुरेशम्॥ ८ ॥
 रणद्धंसके मञ्जुलेऽत्यन्तशोणे
 मनोहारिलावण्यपीयूषपूर्णं ।
 मनःषट्पदो मे भवक्लेशतप्तः
 सदा मोदतां स्कन्द ते पादपद्मे॥ ९ ॥
 सुवर्णाभदिव्याम्बरैर्भासमानाम्
 क्णत्किङ्किणीमेखलाशोभमानाम् ।
 लसद्धेमपट्टेन विद्योतमानाम्
 कटिं भावये स्कन्द ते दीप्यमानाम्॥ १० ॥
 पुलिन्देशकन्याघनाभोगतुङ्ग-
 स्तनालिङ्गनासक्तकाश्मीररागम्।
 नमस्याम्यहं तारकारे तवोरः
 स्वभक्तावने सर्वदा सानुरागम्॥ ११ ॥

विधौ क्लृप्तदण्डान् स्वलीलाधृताण्डान्
 निरस्तेभशुण्डान् द्विषत्कालदण्डान्।
 हतेन्द्रारिषण्डाञ्जगत्ताणशौण्डान्
 सदा ते प्रचण्डान् श्रये बाहुदण्डान् ॥ १२ ॥

सदा शारदाः षण्मृगाङ्का यदि स्युः
 समुद्यन्त एव स्थिताश्चेत् समन्तात्।
 सदा पूर्णबिम्बाः कलङ्कैश्च हीनास्-
 तदा त्वन्मुखानां ब्रुवे स्कन्द साम्यम् ॥ १३ ॥

स्फुरन्मन्दहासैः सहंसानि चञ्चत्
 कटाक्षावलीभृङ्गसङ्घोज्ज्वलानि ।
 सुधास्यन्दिबिम्बाधराणीशसूनो
 तवाऽऽलोकये षण्मुखाम्भोरुहाणि ॥ १४ ॥

विशालेषु कर्णान्तदीर्घेष्वजस्रम्
 दयास्यन्दिषु द्वादशस्वीक्षणेषु।
 मयीषत् कटाक्षः सकृत् पातितश्चेद्-
 भवेत् ते दयाशील का नाम हानिः ॥ १५ ॥

सुताङ्गोद्भवो मेऽसि जीवेति षड्वा
 जपन् मन्त्रमीशो मुदा जिघ्रते यान्।
 जगद्भारभृद्भ्यो जगन्नाथ तेभ्यः
 किरीटोज्ज्वलेभ्यो नमो मस्तकेभ्यः ॥ १६ ॥

स्फुरद्रत्नकेयूरहाराभिरामश-
 चलत्कुण्डलश्रीलसद्गण्डभागः।
 कटौ पीतवासाः करे चारुशक्तिः
 पुरस्तान्ममास्तां पुरारेस्तनूजः ॥ १७ ॥

इहाऽऽयाहि वत्सेति हस्तान् प्रसार्या-
 ऽऽह्वयत्यादराच्छङ्करे मातुरङ्कात।
 समुत्पत्य तातं श्रयन्तं कुमारम्
 हराश्लिष्टगात्रं भजे बालमूर्तिम् ॥ १८ ॥

कुमारेशसूनो गुह स्कन्द सेना-
 पते शक्तिपाणे मयूराधिरूढ।
 पुलिन्दात्मजाकान्त भक्तार्तिहारिन्
 प्रभो तारकारे सदा रक्ष मां त्वम् ॥ १९ ॥
 प्रशान्तेन्द्रिये नष्टसंज्ञे विचेष्टे
 कफोद्गारिवक्त्रे भयोत्कम्पिगात्रे।
 प्रयाणोन्मुखे मय्यनाथे तदानीम्
 द्रुतं मे दयालो भवाग्रे गुह त्वम् ॥ २० ॥

कृतान्तस्य दूतेषु चण्डेषु कोपाद्-
 दहच्छिन्धि भिन्धीति मां तर्जयत्सु।
 मयूरं समारुह्य मा भीरिति त्वम्
 पुरः शक्तिपाणिर्ममाऽऽयाहि शीघ्रम् ॥ २१ ॥

प्रणम्यासकृत् पादयोस्ते पतित्वा
 प्रसाद्य प्रभो प्रार्थयेऽनेकवारम्।
 न वक्तुं क्षमोऽहं तदानीं कृपाब्धे
 न कार्याऽन्तकाले मनागप्युपेक्षा ॥ २२ ॥

सहस्राण्डभोक्ता त्वया शूरनामा
 हतस्तारकः सिंहवक्त्रश्च दैत्यः।
 ममान्तर्हृदिस्थं मनःक्लेशमेकम्
 न हंसि प्रभो किं करोमि क्व यामि ॥ २३ ॥

अहं सर्वदा दुःखभारावसन्नो -
 भवान् दीनबन्धुस्त्वदन्यं न याचे।
 भवद्भक्तिरोधं सदा क्लृप्तबाधम्
 ममाधिं द्रुतं नाशयोमासुत त्वम् ॥ २४ ॥

अपस्मारकुष्ठक्षयार्शः प्रमेह-
 ज्वरोन्मादगुल्मादिरोगा महान्तः।
 पिशाचाश्च सर्वे भवत्पत्रभूतिम्
 विलोक्य क्षणात् तारकारे द्रवन्ते ॥ २५ ॥

दृशि स्कन्दमूर्तिः श्रुतौ स्कन्दकीर्तिर्-
 मुखे मे पवित्रं सदा तच्चरित्रम्।
 करे तस्य कृत्यं वपुस्तस्य भृत्यम्
 गुहे सन्तु लीना ममाशेषभावाः ॥ २६ ॥

मुनीनामुताहो नृणां भक्तिभाजाम्
 अभीष्टप्रदाः सन्ति सर्वत्र देवाः।
 नृणामन्त्यजानामपि स्वार्थदाने
 गुहाद्देवमन्यं न जाने न जाने ॥ २७ ॥

कलत्रं सुता बन्धुवर्गः पशुर्वा
 नरो वाऽथ नारी गृहे ये मदीयाः।
 यजन्तो नमन्तः स्तुवन्तो भवन्तम्
 स्मरन्तश्च ते सन्तु सर्वे कुमार ॥ २८ ॥

मृगाः पक्षिणो दंशका ये च दुष्टास्-
 तथा व्याधयो बाधका ये मदङ्गे।
 भवच्छक्तितीक्ष्णाग्रभिन्नाः सुदूरे
 विनश्यन्तु ते चूर्णितक्रौञ्चशैल ॥ २९ ॥

जनित्री पिता च स्वपुत्रापराधम्
 सहेते न किं देवसेनाधिनाथ।
 अहं चातिबालो भवाँल्लोकतातः
 क्षमस्वापराधं समस्तं महेश ॥ ३० ॥

नमः केकिने शक्तये चापि तुभ्यम्
 नमश्छाग तुभ्यं नमः कुक्कुटाय।
 नमः सिन्धवे सिन्धुदेशाय तुभ्यम्
 पुनः स्कन्दमूर्ते नमस्ते नमोऽस्तु ॥ ३१ ॥

जयाऽऽनन्दभूमन् जयापारधामन्
 जयामोघकीर्ते जयाऽऽनन्दमूर्ते।
 जयाऽऽनन्दसिन्धो जयाशेषबन्धो
 जय त्वं सदा मुक्तिदानेशसूनो ॥ ३२ ॥

भुजङ्गारव्यवृत्तेन क्लृप्तं स्तवं यः
 पठेद्भक्तियुक्तो गुहं सम्प्रणम्य।
 स पुत्रान् कलत्रं धनं दीर्घमायुर्-
 लभेत् स्कन्दसायुज्यमन्ते नरः सः ॥ ३३ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-सुब्रह्मण्यभुजङ्गं सम्पूर्णम् ॥



॥ सङ्क्षेपरामायणम् ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
 प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥
 वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे।
 यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम्॥

॥ श्री-गुरु-प्रार्थना ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
 गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री-गुरवे नमः॥
 सदाशिवसमारम्भां शङ्कराचार्यमध्यमाम्।
 अस्मदाचार्यपर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम्॥
 अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
 तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री-गुरवे नमः॥

॥ श्री-सरस्वती-प्रार्थना ॥

दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिनिभैरक्षमालां दधाना
 हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण।
 भासा कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकमणिनिभा भासमानाऽसमाना
 सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना॥

॥ श्री-वाल्मीकि-नमस्क्रिया ॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
 आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥ १ ॥

वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः।
 शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम् ॥ २ ॥
 यः पिबन् सततं रामचरितामृतसागरम्।
 अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्मषम् ॥ ३ ॥

॥ श्री-हनुमन्नमस्क्रिया ॥

गोष्पदीकृत-वाराशिं मशकीकृत-राक्षसम्।
 रामायण-महामाला-रत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥ १ ॥
 अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम्।
 कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ॥ २ ॥
 उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलं यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।
 आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥ ३ ॥
 आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रि-कमनीय-विग्रहम्।
 पारिजात-तरुमूल-वासिनं भावयामि पवमान-नन्दनम् ॥ ४ ॥
 यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।
 बाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥ ५ ॥
 मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
 वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि ॥ ६ ॥

॥ श्री-रामायण-प्रार्थना ॥

यः कर्णाञ्जलिसम्पुटैरहरहः सम्यक् पिबत्यादरात्
 वाल्मीकेर्वदनारविन्दगलितं रामायणाख्यं मधु।
 जन्म-व्याधि-जरा-विपत्ति-मरणैरत्यन्त-सोपद्रवम्
 संसारं स विहाय गच्छति पुमान् विष्णोः पदं शाश्वतम् ॥ १ ॥

तदुपगत-समास-सन्धियोगं सममधुरोपनतार्थ-वाक्यबद्धम्।
रघुवरचरितं मुनिप्रणीतं दशशिरसश्च वधं निशामयध्वम् ॥ २ ॥

वाल्मीकि-गिरिसम्भूता रामसागरगामिनी।
पुनातु भुवनं पुण्या रामायणमहानदी ॥ ३ ॥
श्लोकसारजलाकीर्णं सर्गकल्लोलसङ्कुलम्।
काण्डग्राहमहामीनं वन्दे रामायणार्णवम् ॥ ४ ॥
वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे।
वेदः प्राचेतसादासीत् साक्षाद्रामायणात्मना ॥ ५ ॥

॥ श्री-राम-ध्यानम् ॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
मध्ये पुष्पकमासने मणिमये वीरासने सुस्थितम्।
अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनिभ्यः परम्
व्याख्यान्तं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम् ॥ १ ॥

वामे भूमिसुता पुरश्च हनुमान् पश्चात् सुमित्रासुतः
शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वाय्वादिकोणेषु च।
सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम् ॥ २ ॥

रामं रामानुजं सीतां भरतं भरतानुजम्।
सुग्रीवं वायुसूनुं च प्रणमामि पुनः पुनः ॥ ३ ॥

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः ॥ ४ ॥

ॐ श्री-गुरुभ्यो नमः।

॥ श्रीमद्रामायणम् ॥

॥ बालकाण्डः ॥

॥ अथ प्रथमोऽध्यायः ॥

तपः स्वाध्यायनिरतं तपस्वी वाग्विदां वरम्।
 नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिपुङ्गवम् ॥ १ ॥
 को न्वस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान्।
 धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः ॥ २ ॥
 चारित्र्येण च को युक्तः सर्वभूतेषु को हितः।
 विद्वान् कः कः समर्थश्च कश्चैकप्रियदर्शनः ॥ ३ ॥
 आत्मवान् को जितक्रोधो मतिमान् कोऽनसूयकः।
 कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे ॥ ४ ॥
 एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं परं कौतूहलं हि मे।
 महर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवंविधं नरम् ॥ ५ ॥
 श्रुत्वा चैतत्त्रिलोकज्ञो वाल्मीकेर्नारदो वचः।
 श्रूयतामिति चाऽऽमन्त्र्य प्रहृष्टो वाक्यमब्रवीत् ॥ ६ ॥
 बहवो दुर्लभाश्चैव ये त्वया कीर्तिता गुणाः।
 मुने वक्ष्याम्यहं बुद्ध्वा तैर्युक्तः श्रूयतां नरः ॥ ७ ॥
 इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः।
 नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी ॥ ८ ॥
 बुद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी श्रीमाञ्छत्रुनिबर्हणः।
 विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः ॥ ९ ॥

महोरस्को महेष्वासो गूढजत्रुररिन्दमः।
आजानुबाहुः सुशिराः सुललाटः सुविक्रमः ॥ १० ॥

समः समविभक्ताङ्गः स्निग्धवर्णः प्रतापवान्।
पीनवक्षा विशालाक्षो लक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः ॥ ११ ॥

धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च प्रजानां च हिते रतः।
यशस्वी ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान् ॥ १२ ॥

प्रजापतिसमः श्रीमान् धाता रिपुनिषूदनः।
रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता ॥ १३ ॥

रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता।
वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः ॥ १४ ॥

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो स्मृतिमान् प्रतिभानवान्।
सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा विचक्षणः ॥ १५ ॥

सर्वदाऽभिगतः सद्भिः समुद्र इव सिन्धुभिः।
आर्यः सर्वसमश्चैव सदैव प्रियदर्शनः ॥ १६ ॥

स च सर्वगुणोपेतः कौसल्यानन्दवर्धनः।
समुद्र इव गाम्भीर्यं धैर्येण हिमवानिव ॥ १७ ॥

विष्णुना सदृशो वीर्यं सोमवत् प्रियदर्शनः।
कालाग्निसदृशः क्रोधे क्षमया पृथिवीसमः ॥ १८ ॥

धनदेन समस्त्यागे सत्ये धर्म इवापरः।
तमेवङ्गुणसम्पन्नं रामं सत्यपराक्रमम् ॥ १९ ॥

ज्येष्ठं श्रेष्ठगुणैर्युक्तं प्रियं दशरथः सुतम्।
प्रकृतीनां हितैर्युक्तं प्रकृतिप्रियकाम्यया ॥ २० ॥

यौवराज्येन संयोक्तुम् ऐच्छत् प्रीत्या महीपतिः।
तस्याभिषेकसम्भारान् दृष्ट्वा भार्याऽथ कैकयी ॥ २१ ॥

पूर्वं दत्तवरा देवी वरमेनमयाचत।
विवासनं च रामस्य भरतस्याभिषेचनम् ॥ २२ ॥

स सत्यवचनाद्राजा धर्मपाशेन संयतः।
विवासयामास सुतं रामं दशरथः प्रियम् ॥ २३ ॥

स जगाम वनं वीरः प्रतिज्ञामनुपालयन्।
पितुर्वचननिर्देशात् कैकेय्याः प्रियकारणात् ॥ २४ ॥

तं व्रजन्तं प्रियो भ्राता लक्ष्मणोऽनुजगाम ह।
स्नेहाद्विनयसम्पन्नः सुमित्रानन्दवर्धनः ॥ २५ ॥

भ्रातरं दयितो भ्रातुः सौभ्रात्रमनुदर्शयन्।
रामस्य दयिता भार्या नित्यं प्राणसमा हिता ॥ २६ ॥

जनकस्य कुले जाता देवमायेव निर्मिता।
सर्वलक्षणसम्पन्ना नारीणामुत्तमा वधूः ॥ २७ ॥

सीताऽप्यनुगता रामं शशिनं रोहिणी यथा।
पौरैरनुगतो दूरं पित्रा दशरथेन च ॥ २८ ॥

शृङ्गवेरपुरे सूतं गङ्गाकूले व्यसर्जयत्।
गुहमासाद्य धर्मात्मा निषादाधिपतिं प्रियम् ॥ २९ ॥

गुहेन सहितो रामो लक्ष्मणेन च सीतया।
ते वनेन वनं गत्वा नदीस्तीर्त्वा बहूदकाः ॥ ३० ॥

चित्रकूटमनुप्राप्य भरद्वाजस्य शासनात्।
रम्यमावसथं कृत्वा रममाणा वने त्रयः ॥ ३१ ॥

देवगन्धर्वसङ्काशास्तत्र ते न्यवसन् सुखम्।
चित्रकूटं गते रामे पुत्रशोकातुरस्तथा ॥ ३२ ॥

राजा दशरथः स्वर्गं जगाम विलपन् सुतम्।
मृते तु तस्मिन् भरतो वसिष्ठप्रमुखैर्द्विजैः ॥ ३३ ॥

नियुज्यमानो राज्याय नैच्छद्राज्यं महाबलः।
स जगाम वनं वीरो रामपादप्रसादकः ॥ ३४ ॥

गत्वा तु स महात्मानं रामं सत्यपराक्रमम्।
अयाचद्भ्रातरं रामम् आर्यभावपुरस्कृतः ॥ ३५ ॥

त्वमेव राजा धर्मज्ञ इति रामं वचोऽब्रवीत्।
रामोऽपि परमोदारः सुमुखः सुमहायशाः ॥ ३६ ॥

न चेच्छत् पितुरादेशाद्राज्यं रामो महाबलः।
पादुके चास्य राज्याय न्यासं दत्त्वा पुनः पुनः ॥ ३७ ॥

निवर्तयामास ततो भरतं भरताग्रजः।
स काममनवाप्यैव रामपादावुपस्पृशन् ॥ ३८ ॥

नन्दिग्रामेऽकरोद्राज्यं रामागमनकाङ्क्षया।
गते तु भरते श्रीमान् सत्यसन्धो जितेन्द्रियः ॥ ३९ ॥

रामस्तु पुनरालक्ष्य नागरस्य जनस्य च।
तत्राऽऽगमनमेकाग्रो दण्डकान् प्रविवेश ह ॥ ४० ॥

प्रविश्य तु महारण्यं रामो राजीवलोचनः।
विराधं राक्षसं हत्वा शरभङ्गं ददर्श ह ॥ ४१ ॥

सुतीक्ष्णं चाप्यगस्त्यं च अगस्त्यभ्रातरं तथा।
अगस्त्यवचनाच्चैव जग्राहैन्द्रं शरासनम् ॥ ४२ ॥

खड्गं च परमप्रीतस्तूणी चाक्षयसायकौ।
 वसतस्तस्य रामस्य वने वनचरैः सह ॥ ४३ ॥
 ऋषयोऽभ्यागमन् सर्वे वधायासुररक्षसाम्।
 स तेषां प्रति शुश्राव राक्षसानां तदा वने ॥ ४४ ॥
 प्रतिज्ञातश्च रामेण वधः संयति रक्षसाम्।
 ऋषीणामग्निकल्पानां दण्डकारण्यवासिनाम् ॥ ४५ ॥
 तेन तत्रैव वसता जनस्थाननिवासिनी।
 विरूपिता शूर्पणखा राक्षसी कामरूपिणी ॥ ४६ ॥
 ततः शूर्पणखावाक्यादुद्युक्तान् सर्वराक्षसान्।
 खरं त्रिशिरसं चैव दूषणं चैव राक्षसम् ॥ ४७ ॥
 निजघान रणे रामस्तेषां चैव पदानुगान्।
 वने तस्मिन् निवसता जनस्थाननिवासिनाम् ॥ ४८ ॥
 रक्षसां निहतान्यासन् सहस्राणि चतुर्दश।
 ततो ज्ञातिवधं श्रुत्वा रावणः क्रोधमूर्च्छितः ॥ ४९ ॥
 सहायं वरयामास मारीचं नाम राक्षसम्।
 वार्यमाणः सुबहुशो मारीचेन स रावणः ॥ ५० ॥
 न विरोधो बलवता क्षमो रावण तेन ते।
 अनादृत्य तु तद्वाक्यं रावणः कालचोदितः ॥ ५१ ॥
 जगाम सहमारीचस्तस्याऽऽश्रमपदं तदा।
 तेन मायाविना दूरमपवाह्य नृपात्मजौ ॥ ५२ ॥
 जहार भार्या रामस्य गृध्रं हत्वा जटायुषम्।
 गृध्रं च निहतं दृष्ट्वा हतां श्रुत्वा च मैथिलीम् ॥ ५३ ॥

राघवः शोकसन्तप्तो विललापाऽऽकुलेन्द्रियः।
 ततस्तेनैव शोकेन गृध्रं दग्ध्वा जटायुषम्॥५४॥
 मार्गमाणो वने सीतां राक्षसं सन्ददर्श ह।
 कबन्धं नाम रूपेण विकृतं घोरदर्शनम्॥५५॥
 तं निहत्य महाबाहुर्ददाह स्वर्गतश्च सः।
 स चास्य कथयामास शबरीं धर्मचारिणीम्॥५६॥
 श्रमणीं धर्मनिपुणाम् अभिगच्छेति राघव।
 सोऽभ्यगच्छन् महातेजाः शबरीं शत्रुसूदनः॥५७॥
 शबर्या पूजितः सम्यग्रामो दशरथात्मजः।
 पम्पातीरे हनुमता सङ्गतो वानरेण ह॥५८॥
 हनुमद्वचनाच्चैव सुग्रीवेण समागतः।
 सुग्रीवाय च तत्सर्वं शंसद्रामो महाबलः॥५९॥
 आदितस्तद्यथा वृत्तं सीतायाश्च विशेषतः।
 सुग्रीवश्चापि तत्सर्वं श्रुत्वा रामस्य वानरः॥६०॥
 चकार सख्यं रामेण प्रीतश्चैवाग्निसाक्षिकम्।
 ततो वानरराजेन वैरानुकथनं प्रति॥६१॥
 रामायाऽऽवेदितं सर्वं प्रणयाद्दुःखितेन च।
 प्रतिज्ञातं च रामेण तदा वालिवधं प्रति॥६२॥
 वालिनश्च बलं तत्र कथयामास वानरः।
 सुग्रीवः शङ्कितश्चासीन्नित्यं वीर्येण राघवे॥६३॥
 राघवः प्रत्ययार्थं तु दुन्दुभेः कायमुत्तमम्।
 दर्शयामास सुग्रीवो महापर्वतसन्निभम्॥६४॥

उत्समयित्वा महाबाहुः प्रेक्ष्य चास्थि महाबलः ।
पादाङ्गुष्ठेन चिक्षेप सम्पूर्णं दशयोजनम् ॥ ६५ ॥

बिभेद च पुनः सालान् सप्तैकेन महेषुणा ।
गिरि रसातलं चैव जनयन् प्रत्ययं तदा ॥ ६६ ॥
ततः प्रीतमनास्तेन विश्वस्तः स महाकपिः ।
किष्किन्ध्यां रामसहितो जगाम च गुहां तदा ॥ ६७ ॥

ततोऽगर्जद्धरिवरः सुग्रीवो हेमपिङ्गलः ।
तेन नादेन महता निर्जगाम हरीश्वरः ॥ ६८ ॥
अनुमान्य तदा तारां सुग्रीवेण समागतः ।
निजघान च तत्रैनं शरेणैकेन राघवः ॥ ६९ ॥
ततः सुग्रीववचनाद्धत्वा वालिनमाहवे ।
सुग्रीवमेव तद्राज्ये राघवः प्रत्यपादयत् ॥ ७० ॥

स च सर्वान् समानीय वानरान् वानरर्षभः ।
दिशः प्रस्थापयामास दिदृक्षुर्जनकात्मजाम् ॥ ७१ ॥

ततो गृध्रस्य वचनात्सम्पातेर्हनुमान् बली ।
शतयोजनविस्तीर्णं पुप्लुवे लवणार्णवम् ॥ ७२ ॥

तत्र लङ्कां समासाद्य पुरीं रावणपालिताम् ।
ददर्श सीतां ध्यायन्तीमशोकवनिकां गताम् ॥ ७३ ॥

निवेदयित्वाऽभिज्ञानं प्रवृत्तिं विनिवेद्य च ।
समाश्वास्य च वैदेहीं मर्दयामास तोरणम् ॥ ७४ ॥

पञ्च सेनाग्रगान् हत्वा सप्त मन्त्रिसुतानपि ।
शूरमक्षं च निष्पिष्य ग्रहणं समुपागमत् ॥ ७५ ॥

अस्त्रेणोन्मुक्तमात्मानं ज्ञात्वा पैतामहाद्वरात्।
 मर्षयन् राक्षसान् वीरो यन्त्रिणस्तान् यदृच्छया ॥ ७६ ॥
 ततो दग्ध्वा पुरीं लङ्काम् ऋते सीतां च मैथिलीम्।
 रामाय प्रियमाख्यातुं पुनरायान् महाकपिः ॥ ७७ ॥
 सोऽभिगम्य महात्मानं कृत्वा रामं प्रदक्षिणम्।
 न्यवेदयदमेयात्मा दृष्ट्वा सीतेति तत्त्वतः ॥ ७८ ॥
 ततः सुग्रीवसहितो गत्वा तीरं महोदधेः।
 समुद्रं क्षोभयामास शरैरादित्यसन्निभैः ॥ ७९ ॥
 दर्शयामास चाऽऽत्मानं समुद्रः सरितां पतिः।
 समुद्रवचनाच्चैव नलं सेतुमकारयत् ॥ ८० ॥
 तेन गत्वा पुरीं लङ्कां हत्वा रावणमाहवे।
 रामः सीतामनुप्राप्य परां व्रीडामुपागमत् ॥ ८१ ॥
 तामुवाच ततो रामः परुषं जनसंसदि।
 अमृष्यमाणा सा सीता विवेश ज्वलनं सती ॥ ८२ ॥
 ततोऽग्निवचनात् सीतां ज्ञात्वा विगतकल्मषाम्।
 कर्मणा तेन महता त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ ८३ ॥
 सदेवर्षिगणं तुष्टं राघवस्य महात्मनः।
 बभौ रामः सम्प्रहृष्टः पूजितः सर्वदैवतैः ॥ ८४ ॥
 अभिषिच्य च लङ्कायां राक्षसेन्द्रं विभीषणम्।
 कृतकृत्यस्तदा रामो विज्वरः प्रमुमोद ह ॥ ८५ ॥
 देवताभ्यो वरान् प्राप्य समुत्थाप्य च वानरान्।
 अयोध्यां प्रस्थितो रामः पुष्पकेण सुहृद्-वृतः ॥ ८६ ॥

भरद्वाजाश्रमं गत्वा रामः सत्यपराक्रमः।

भरतस्यान्तिके रामो हनूमन्तं व्यसर्जयत् ॥ ८७ ॥

पुनराख्यायिकां जल्पन् सुग्रीवसहितस्तदा।

पुष्पकं तत् समारुह्य नन्दिग्रामं ययौ तदा ॥ ८८ ॥

नन्दिग्रामे जटां हित्वा भ्रातृभिः सहितोऽनघः।

रामः सीतामनुप्राप्य राज्यं पुनरवाप्तवान् ॥ ८९ ॥

प्रहृष्टमुदितो लोकस्तुष्टः पुष्टः सुधार्मिकः।

निरामयो ह्यरोगश्च दुर्भिक्षभयवर्जितः ॥ ९० ॥

न पुत्रमरणं केचिद्-द्रक्ष्यन्ति पुरुषाः क्वचित्।

नार्यश्चाविधवा नित्यं भविष्यन्ति पतिव्रताः ॥ ९१ ॥

न चाग्निजं भयं किञ्चिन्नाप्सु मज्जन्ति जन्तवः।

न वातजं भयं किञ्चिन्नापि ज्वरकृतं तथा ॥ ९२ ॥

न चापि क्षुद्रयं तत्र न तस्करभयं तथा।

नगराणि च राष्ट्राणि धनधान्ययुतानि च ॥ ९३ ॥

नित्यं प्रमुदिताः सर्वे यथा कृतयुगे तथा।

अश्वमेधशतैरिष्ट्वा तथा बहुसुवर्णकैः ॥ ९४ ॥

गवां कोट्ययुतं दत्त्वा विद्वद्भ्यो विधिपूर्वकम्।

असङ्ख्येयं धनं दत्त्वा ब्राह्मणेभ्यो महायशाः ॥ ९५ ॥

राजवंशाञ्छतगुणान् स्थापयिष्यति राघवः।

चातुर्वर्ण्यं च लोकेऽस्मिन् स्वे स्वे धर्मे नियोक्ष्यति ॥ ९६ ॥

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च।

रामो राज्यमुपासित्वा ब्रह्मलोकं गमिष्यति ॥ ९७ ॥

इदं पवित्रं पापघ्नं पुण्यं वेदैश्च सम्मितम्।
 यः पठेद्रामचरितं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ९८ ॥
 एतदारख्यानमायुष्यं पठन् रामायणं नरः।
 सपुत्रपौत्रः सगणः प्रेत्य स्वर्गे महीयते ॥ ९९ ॥
 पठन् द्विजो वागृषभत्वमीयात्
 स्यात् क्षत्रियो भूमिपतित्वमीयात्।
 वणिग्जनः पण्यफलत्वमीयात्
 जनश्च शूद्रोऽपि महत्त्वमीयात् ॥ १०० ॥
 ॥ इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये बालकाण्डे प्रथमः
 सर्गः ॥

॥ मङ्गलश्लोकाः ॥

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्ताम्
 न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः।
 गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यम्
 लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥ १ ॥
 काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी।
 देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः ॥ २ ॥
 अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
 अधनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम् ॥ ३ ॥
 चरितं रघुनाथस्य शतकोटि-प्रविस्तरम्।
 एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥ ४ ॥

शृण्वन् रामायणं भक्त्या यः पादं पदमेव वा।
स याति ब्रह्मणः स्थानं ब्रह्मणा पूज्यते सदा ॥ ५ ॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥ ६ ॥

यन्मङ्गलं सहस्राक्षे सर्वदेवनमस्कृते।
वृत्रनाशे समभवत् तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥ ७ ॥

यन्मङ्गलं सुपर्णस्य विनताऽकल्पयत् पुरा।
अमृतं प्रार्थयानस्य तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥ ८ ॥

अमृतोत्पादने दैत्यान् घ्नतो वज्रधरस्य यत्।
अदितिर्मङ्गलं प्रादात् तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥ ९ ॥

त्रीन् विक्रमान् प्रक्रमतो विष्णोरमिततेजसः।
यदासीन्मङ्गलं राम तत्ते भवतु मङ्गलम् ॥ १० ॥

ऋषयः सागरा द्वीपा वेदा लोका दिशश्च ते।
मङ्गलानि महाबाहो दिशन्तु तव सर्वदा ॥ ११ ॥

मङ्गलं कोसलेन्द्राय महनीयगुणाब्धये।
चक्रवर्तितनूजाय सार्वभौमाय मङ्गलम् ॥ १२ ॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा
बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै
नारायणायेति समर्पयामि ॥



॥ गोविन्दाष्टकम् ॥

सत्यं ज्ञानमनन्तं नित्यमनाकाशं परमाकाशम्
 गोष्ठप्राङ्गणरिङ्गणलोलमनायासं परमायासम्।
 मायाकल्पितनानाकारमनाकारं भुवनाकारम्
 क्षमामा नाथमनाथं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ १ ॥

मृत्स्नामत्सीहेति यशोदाताडनशैशव-सन्नासम्
 व्यादितवक्त्रालोकितलोकालोकचतुर्दशलोकालिम्।
 लोकत्रयपुरमूलस्तम्भं लोकालोकमनालोकम्
 लोकेशं परमेशं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ २ ॥

त्रैविष्टपरिपुवीरघ्नं क्षितिभारघ्नं भवरोगघ्नम्
 कैवल्यं नवनीताहारमनाहारं भुवनाहारम्।
 वैमल्यस्फुटचेतोवृत्तिविशेषाभासमनाभासम्
 शैवं केवलशान्तं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ३ ॥

गोपालं प्रभुलीलाविग्रहगोपालं कुलगोपालम्
 गोपीखेलनगोवर्धनधृतलीलालालितगोपालम्।
 गोभिर्निगदित-गोविन्दस्फुटनामानं बहुनामानम्
 गोधीगोचरदूरं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ४ ॥

गोपीमण्डलगोष्ठीभेदं भेदावस्थमभेदाभम्
 शश्वद्गोखुरनिर्धूतोद्गतधूलीधूसरसौभाग्यम् ।
 श्रद्धाभक्तिगृहीतानन्दमचिन्त्यं चिन्तितसद्भावम्
 चिन्तामणिमहिमानं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ५ ॥

स्नानव्याकुलयोषिद्वस्त्रमुपादायागमुपारूढम्
 व्यादित्सन्तीरथ दिग्वस्त्रा दातुमुपाकर्षन्तं ताः ।
 निर्धूतद्वयशोकविमोहं बुद्धं बुद्धेरन्तःस्थम्
 सत्तामात्रशरीरं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ६ ॥
 कान्तं कारणकारणमादिमनादिं कालघनाभासम्
 कालिन्दीगतकालियशिरसि सुनृत्यन्तं मुहुरत्यन्तम् ।
 कालं कालकलातीतं कलिताशेषं कलिदोषघ्नम्
 कालत्रयगतिहेतुं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ७ ॥
 वृन्दावनभुवि वृन्दारकगण वृन्दाराधित वन्द्येऽहम्
 कुन्दाभामलमन्दस्मेरसुधानन्दं सुहृदानन्दम् ।
 वन्द्याशेषमहामुनिमानसवन्द्यानन्दपदद्वन्द्वम्
 वन्द्याशेषगुणाब्धिं प्रणमत गोविन्दं परमानन्दम् ॥ ८ ॥
 गोविन्दाष्टकमेतदधीते गोविन्दार्पितचेता यः
 गोविन्दं अच्युत माधव विष्णो गोकुलनायक कृष्णेति ।
 गोविन्दाङ्घ्रि-सरोजध्यान-सुधाजलधौत-समस्ताघः
 गोविन्दं परमानन्दामृतम् अन्तःस्थं स तमभ्येति ॥
 ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-गोविन्दाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ भज गोविन्दम् ॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दम्
 गोविन्दं भज मूढमते ।
 सम्प्राप्ते सन्निहिते काले
 न हि न हि रक्षति डुकृञ् करणे ॥ १ ॥

मूढ जहीहि धनागमतृष्णाम्
कुरु सद्बुद्धिं मनसि वितृष्णाम्।
यल्लभसे निजकर्मोपात्तम्
वित्तं तेन विनोदय चित्तम्॥२॥

यावद्वित्तोपार्जन-सक्तः
तावन्निज-परिवारो रक्तः।
पश्चाज्जीवति जर्जरदेहे
वार्ता कोऽपि न पृच्छति गेहे॥३॥

मा कुरु धनजनयौवनगर्वम्
हरति निमेषात् कालः सर्वम्।
मायामयमिदमखिलं हित्वा
ब्रह्मपदं त्वं प्रविश विदित्वा॥४॥

सुरमन्दिर-तरुमूल-निवासः
शय्या भूतलमजिनं वासः।
सर्व-परिग्रह भोगत्यागः
कस्य सुखं न करोति विरागः॥५॥
भगवद्गीता किञ्चिदधीता
गङ्गाजललव-कणिका पीता।
सकृदपि येन मुरारि समर्चा
क्रियते तस्य यमेन न चर्चा॥६॥

पुनरपि जननं पुनरपि मरणम्
पुनरपि जननी-जठरे शयनम्।
इह संसारे बहुदुस्तारे
कृपयाऽपारे पाहि मुरारे॥७॥

गेयं गीता नामसहस्रं
ध्येयं श्रीपति-रूपमजस्रम्।
नेयं सज्जन-सङ्गे चित्तं
देयं दीनजनाय च वित्तम्॥८॥

अर्थमनर्थ भावय नित्यं
नास्ति ततः सुखलेशः सत्यम्।
पुत्रादपि धनभाजां भीतिः
सर्वत्रैषा विहिता रीतिः॥९॥

गुरुचरणाम्बुज-निर्भर-भक्तः
संसारादचिराद्भव मुक्तः।
सेन्द्रियमानस-नियमादेवं
द्रक्ष्यसि निजहृदयस्थं देवम्॥१०॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य
श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ भज गोविन्दं सम्पूर्णम् ॥

॥ कृष्णाष्टकम् ३ ॥

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम्।
देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्॥१॥

अतसीपुष्पसङ्काशं हारनूपुरशोभितम्।
रत्नकङ्कणकेयूरं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥ २ ॥

कुटिलालकसंयुक्तं पूर्णचन्द्रनिभाननम्।
विलसत् कुण्डलधरं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥ ३ ॥

मन्दारगन्धसंयुक्तं चारुहासं चतुर्भुजम्।
बर्हिपिञ्छावचूडाङ्गं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥ ४ ॥

उत्फुल्लपद्मपत्राक्षं नीलजीमूतसन्निभम्।
यादवानां शिरोरत्नं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥ ५ ॥

रुक्मिणीकेलिसंयुक्तं पीताम्बरसुशोभितम्।
अवाप्ततुलसीगन्धं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥ ६ ॥

गोपिकानां कुचद्वन्द्वं कुङ्कुमाङ्कितवक्षसम्।
श्रीनिकेतं महेष्वासं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥ ७ ॥

श्रीवत्साङ्गं महोरस्कं वनमालाविराजितम्।
शङ्खचक्रधरं देवं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥ ८ ॥

कृष्णाष्टकमिदं पुण्यं प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
कोटिजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥

॥ इति श्री-कृष्णाष्टकं सम्पूर्णम् ॥



॥ हनुमत् पञ्चरत्नम् ॥

वीताखिल-विषयेच्छं जातानन्दाश्रु-पुलकमत्यच्छम्।
सीतापति-दूताद्यं वातात्मजमद्य भावये हृद्यम् ॥ १ ॥

तरुणारुण-मुख-कमलं करुणा-रसपूर-पूरितापाङ्गम्।
सञ्जीवनमाशासे मञ्जुल-महिमानमञ्जना-भाग्यम् ॥ २ ॥

शम्बरवैरि-शरातिगमम्बुजदल-विपुल-लोचनोदारम्।
कम्बुगलमनिलदिष्टं बिम्ब-ज्वलितोष्ठमेकमवलम्बे ॥ ३ ॥

दूरीकृत-सीतार्तिः प्रकटीकृत-रामवैभव-स्फूर्तिः।
दारित-दशमुख-कीर्तिः पुरतो मम भातु हनुमतो मूर्तिः ॥ ४ ॥

वानर-निकराध्यक्षं दानव-कुल-कुमुद-रविकर-सदृशम्।
दीन-जनावन-दीक्षं पवनतपः पाकपुञ्जमद्राक्षम् ॥ ५ ॥

एतत् पवनसुतस्य स्तोत्रं यः पठति पञ्चरत्नाख्यम्।
चिरमिह निखिलान् भोगान् भुक्त्वा श्रीराम-भक्तिभाग् भवति ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
श्री-हनुमत्-पञ्चरत्नं सम्पूर्णम् ॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृत-मस्तकाञ्जलिम्।
बाष्पवारिपरिपूर्ण-लोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥

उल्लङ्घ्य सिन्धोः सलिलं सलीलम्
यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्काम्
नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥

बुद्धिर्बलं यशो धैर्यं निर्भयत्वम् अरोगता।
अजाड्यं वाक्पटुत्वं च हनुमत्स्मरणाद्भवेत्॥
असाध्यसाधक स्वामिन् असाध्यं तव किं वद।
रामदूत कृपसिन्धो मत्कार्यं साधय प्रभो॥



॥ शङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

कैलासाचल-मध्यस्थं कामिताभीष्टदायकम् ।
 ब्रह्मादि-प्रार्थना-प्राप्त-दिव्यमानुष-विग्रहम् ॥
 भक्तानुग्रहणैकान्त-शान्त-स्वान्त-समुज्ज्वलम् ।
 संयज्ञं संयमीन्द्राणां सार्वभौमं जगद्गुरुम् ॥
 किङ्करीभूतभक्तैः पङ्कजातविशोषणम् ।
 ध्यायामि शङ्कराचार्यं सर्वलोकैकशङ्करम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

श्रीशङ्कराचार्यवर्यो ब्रह्मज्ञानप्रदायकः ।
 अज्ञानतिमिरादित्यः सुज्ञानाम्बुधिचन्द्रमा ॥ १ ॥
 वर्णाश्रमप्रतिष्ठाता श्रीमान् मुक्तिप्रदायकः ।
 शिष्योपदेशनिरतो भक्ताभीष्टप्रदायकः ॥ २ ॥
 सूक्ष्मतत्त्वरहस्यज्ञः कार्याकार्यप्रबोधकः ।
 ज्ञानमुद्राञ्चितकरः शिष्य-हृत्ताप-हारकः ॥ ३ ॥
 पारिव्राज्याश्रमोद्धर्ता सर्वतन्त्रस्वतन्त्रधीः ।
 अद्वैतस्थापनाचार्यः साक्षाच्छङ्कररूपभृत् ॥ ४ ॥
 षण्मतस्थापनाचार्यस्त्रयीमार्गप्रकाशकः ।
 वेदवेदान्ततत्त्वज्ञो दुर्वादिमतखण्डनः ॥ ५ ॥
 वैराग्यनिरतः शान्तः संसारार्णवतारकः ।
 प्रसन्नवदनाम्भोजः परमार्थप्रकाशकः ॥ ६ ॥

पुराणस्मृतिसारज्ञो नित्यतृप्तो महच्छुचिः।
 नित्यानन्दो निरातङ्को निःसङ्गो निर्मलात्मकः ॥ ७ ॥
 निर्ममो निरहङ्कारो विश्ववन्द्यपदाम्बुजः।
 सत्त्वप्रधानः सद्भावः सङ्ख्यातीतगुणोज्ज्वलः ॥ ८ ॥
 अनघः सारहृदयः सुधीः सारस्वतप्रदः।
 सत्यात्मा पुण्यशीलश्च साङ्ख्ययोगविचक्षणः ॥ ९ ॥
 तपोराशिर्महातेजा गुणत्रयविभागवित्।
 कलिघ्नः कालधर्मज्ञस्तमोगुणनिवारकः ॥ १० ॥
 भगवान् भारतीजेता शारदाह्वानपण्डितः।
 धर्माधर्मविभागज्ञो लक्ष्यभेदप्रदर्शकः ॥ ११ ॥
 नादबिन्दुकलाभिज्ञो योगिहृत्पद्मभास्करः।
 अतीन्द्रिय-ज्ञाननिधिर्नित्यानित्यविवेकवान् ॥ १२ ॥
 चिदानन्दश्चिन्मयात्मा परकाय-प्रवेशकृत्।
 अमानुष-चरित्राढ्यः क्षेमदायी क्षमाकरः ॥ १३ ॥
 भवो भद्रप्रदो भूरिमहिमा विश्वरञ्जकः।
 स्वप्रकाशः सदाधारो विश्वबन्धुः शुभोदयः ॥ १४ ॥
 विशालकीर्तिर्वागीशः सर्वलोकहितोत्सुकः।
 कैलासयात्रा-सम्प्राप्त-चन्द्रमौलि-प्रपूजकः ॥ १५ ॥
 काञ्च्यां श्रीचक्र-राजाख्य-यन्त्रस्थापन-दीक्षितः।
 श्रीचक्रात्मक-ताटङ्क-पोषिताम्बा-मनोरथः ॥ १६ ॥
 श्रीब्रह्मसूत्रोपनिषद्भाष्यादिग्रन्थकल्पकः।
 चतुर्दिक्कतुराम्नायप्रतिष्ठाता महामतिः ॥ १७ ॥

द्विसप्तति-मतोच्छेत्ता सर्वदिग्विजयप्रभुः ।
काषायवसनोपेतो भस्मोद्धूलितविग्रहः ॥ १८ ॥

ज्ञानात्मकैकदण्डाढ्यः कमण्डलुलसत्करः ।
व्याससन्दर्शनप्रीतो भगवत्पादसंज्ञकः ॥ १९ ॥

चतुःषष्टिकलाभिज्ञो ब्रह्मराक्षस-मोक्षदः ।
सौन्दर्यलहरीमुख्यबहुस्तोत्रविधायकः ॥ २० ॥

श्रीमन्मण्डनमिश्राख्यस्वयम्भूजयसन्नुतः ।
तोटकाचार्यसम्पूज्यः पद्मपादार्चिताङ्घ्रिकः ॥ २१ ॥

हस्तामलकयोगीन्द्रब्रह्मज्ञानप्रदायकः ।
सुरेश्वरादि-सच्छिष्य-सन्न्यासाश्रम-दायकः ॥ २२ ॥

निर्व्याजकरुणामूर्तिर्जगत्पूज्यो जगद्गुरुः ।
भेरीपटहवाद्यादिराजलक्षणलक्षितः ।
सकृत्स्मरणसन्तुष्टः सर्वज्ञो ज्ञानदायकः ॥ २३ ॥

॥ इति श्री-शङ्कराचार्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ तोटकाष्टकम् ॥

शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरायणम् ।
सूत्रभाष्यकृतौ वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः ॥

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च
व्यासं शुक्रं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम् ।
श्री-शङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यम्
तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरुन् सन्ततमानतोऽस्मि ॥

विदिताखिल-शास्त्र-सुधा-जलधे महितोपनिषत्-कथितार्थ-निधे।
हृदये कलये विमलं चरणं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥ १ ॥

करुणा-वरुणालय पालय मां भव-सागर-दुःख-विदून-हृदम्।
रचयाखिल-दर्शन-तत्त्व-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥ २ ॥

भवता जनता सुहिता भविता निज-बोध-विचारण-चारु-मते।
कलयेश्वर-जीव-विवेक-विदं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥ ३ ॥

भव एव भवानिति मे नितरां समजायत चेतसि कौतुकिता।
मम वारय मोह-महा-जलधिं भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥ ४ ॥

सुकृतेऽधिकृते बहुधा भवतो भविता सम-दर्शन-लालसता।
अतिदीनमिमं परिपालय मां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥ ५ ॥

जगतीमवितुं कलिताकृतयो विचरन्ति महा-महसश्छलतः।
अहिमांशुरिवात्र विभासि पुरो भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥ ६ ॥

गुरु-पुङ्गव पुङ्गव-केतन ते समतामयतां न हि कोऽपि सुधीः।
शरणागत-वत्सल तत्त्व-निधे भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥ ७ ॥

विदिता न मया विशदैक-कला न च किञ्चन काञ्चनमस्ति गुरो।
द्रुतमेव विधेहि कृपां सहजां भव शङ्कर देशिक मे शरणम्॥ ८ ॥

॥ इति श्री-तोडकाचार्यविरचितं श्री-तोडकाष्टकं सम्पूर्णम्॥



॥ शीतलाष्टकम् ॥

अस्य श्रीशीतलास्तोत्रस्य महादेव ऋषिः ।
 अनुष्टुप् छन्दः । शीतला देवता । लक्ष्मीबीजम् ।
 भवानी शक्तिः । सर्वविस्फोटकनिवृत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ईश्वर उवाच

वन्देऽहं शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बराम् ।
 मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालङ्कृतमस्तकाम् ॥ १ ॥

वन्देऽहं शीतलां देवीं सर्वरोगभयापहाम् ।
 यामासाद्य निवर्तेत विस्फोटकभयं महत् ॥ २ ॥

शीतले शीतले चेति यो ब्रूयाद्वाहपीडितः ।
 विस्फोटकभयं घोरं क्षिप्रं तस्य प्रणश्यति ॥ ३ ॥

यस्त्वामुदकमध्ये तु ध्यात्वा सम्पूजयेन्नरः ।
 विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥ ४ ॥

शीतले ज्वरदग्धस्य पूतिगन्धयुतस्य च ।
 प्रणष्टचक्षुषः पुंसस्त्वामाहुर्जीवनौषधम् ॥ ५ ॥

शीतले तनुजान् रोगान् नृणां हरसि दुस्त्यजान् ।
 विस्फोटकविदीर्णानां त्वमेकाऽमृतवर्षिणी ॥ ६ ॥

गलगण्डग्रहा रोगा ये चान्ये दारुणा नृणाम् ।
 त्वदनुध्यानमात्रेण शीतले यान्ति सङ्क्षयम् ॥ ७ ॥

न मन्त्रो नौषधं तस्य पापरोगस्य विद्यते ।
 त्वामेकां शीतले धात्रीं नान्यां पश्यामि देवताम् ॥ ८ ॥

मृणालतन्तुसदृशीं नाभिहन्मध्यसंस्थिताम्।
यस्त्वां सञ्चिन्तयेद्देवि तस्य मृत्युर्न जायते ॥ ९ ॥

अष्टकं शीतलादेव्या यो नरः प्रपठेत्सदा।
विस्फोटकभयं घोरं गृहे तस्य न जायते ॥ १० ॥

श्रोतव्यं पठितव्यं च श्रद्धाभक्तिसमन्वितैः।
उपसर्गविनाशाय परं स्वस्त्ययनं महत् ॥ ११ ॥

शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता।
शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः ॥ १२ ॥

रासभो गर्दभश्चैव खरो वैशाखनन्दनः।
शीतलावाहनश्चैव दूर्वाकन्दनिकृन्तनः ॥ १३ ॥

एतानि खरनामानि शीतलाग्रे तु यः पठेत्।
तस्य गेहे शिशूनां च शीतलारुङ् न जायते ॥ १४ ॥

शीतलाष्टकमेवेदं न देयं यस्यकस्यचित्।
दातव्यं च सदा तस्मै श्रद्धाभक्तियुताय वै ॥ १५ ॥

॥ इति श्री-स्कान्दपुराणे श्री-शीतलाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ महिषासुरमर्दिनि स्तोत्रम् ॥

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दिनुते
गिरिवर-विन्ध्य-शिरोधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते
जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १ ॥

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
 त्रिभुवनपोषिणि शङ्करतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते।
 दनुज-निरोषिणि दितिसुत-रोषिणि दुर्मद-शोषिणि सिन्धुसुते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ २ ॥

अयि जगदम्ब-मदम्ब-कदम्ब-वनप्रिय-वासिनि हासरते
 शिखरि शिरोमणि तुङ्ग-हिमालय-शृङ्ग-निजालय-मध्यगते।
 मधु-मधुरे मधु-कैटभ-गञ्जिनि कैटभ-भञ्जिनि रासरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ३ ॥

अयि शतखण्ड-विखण्डित-रुण्ड-वितुण्डित-शुण्ड-गजाधिपते
 रिपु-गज-गण्ड-विदारण-चण्ड-पराक्रम-शुण्ड-मृगाधिपते।
 निज-भुज-दण्ड-निपातित-खण्ड-विपातित-मुण्ड-भटाधिपते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ४ ॥

अयि रण-दुर्मद-शत्रु-वधोदित-दुर्धर-निर्जर-शक्तिभृते
 चतुर-विचार-धुरीण-महाशिव-दूतकृत-प्रमथाधिपते।
 दुरित-दुरीह-दुराशय-दुर्मति-दानवदूत-कृतान्तमते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ५ ॥

अयि शरणागत-वैरि-वधूवर-वीर-वराभय-दायकरे
 त्रिभुवन-मस्तक-शूल-विरोधि शिरोधि कृतामल-शूलकरे।
 दुमिदुमि-तामर-दुन्दुभिनाद-महो-मुखरीकृत-तिग्मकरे
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ६ ॥

अयि निज-हुङ्कृति मात्र-निराकृत-धूम्रविलोचन-धूम्रशते
 समर-विशोषित-शोणित-बीज-समुद्भव-शोणित-बीजलते।
 शिव-शिव-शुम्भ-निशुम्भ-महाहव-तर्पित-भूत-पिशाचरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ७ ॥

धनुरनु-सङ्ग-रणक्षणसङ्ग-परिस्फुर-दङ्ग-नटत्कटके
 कनक-पिशङ्ग-पृषत्क-निषङ्ग-रसद्भट-शृङ्ग-हतावटुके।
 कृत-चतुरङ्ग-बलक्षिति-रङ्ग-घटद्वहुरङ्ग-रटद्वटुके
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ८ ॥

जय जय जय्य-जयेजय-शब्द-परस्तुति-तत्पर-विश्वनुते
 भण-भण-भिञ्जिमि-भिङ्कृत-नूपुर-सिञ्जित-मोहित-भूतपते।
 नटित-नटार्ध-नटीनट-नायक-नाटित-नाट्य-सुगानरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ९ ॥

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर-कान्तियुते
 श्रित-रजनी-रजनी-रजनी-रजनी-रजनीकर-वक्रवृते।
 सुनयन-विभ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमर-भ्रमराधिपते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १० ॥

सहित-महाहव-मल्लम-तल्लिक-मल्लित-रल्लक-मल्लरते
 विरचित-वल्लिक-पल्लिक-मल्लिक-भिल्लिक-भिल्लिक-वर्गवृते।
 सितकृत-फुल्लसमुल्ल-सितारुण-तल्लज-पल्लव-सल्ललिते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ ११ ॥

अविरल-गण्ड-गलन्मद-मेदुर-मत्त-मतङ्गज-राजपते
 त्रिभुवन-भूषण-भूत-कलानिधि रूप-पयोनिधि राजसुते।
 अयि सुद-तीजन-लालसमानस-मोहन-मन्मथ-राजसुते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १२ ॥

कमल-दलामल-कोमल-कान्ति कलाकलितामल-भाललते
 सकल-विलास-कलानिलयक्रम-केलि-चलत्कल-हंसकुले।
 अलिकुल-सङ्कुल-कुवलय-मण्डल-मौलिमिल-द्वकुलालि-कुले
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १३ ॥

करमुरली-रव-वीजित-कूजित-लज्जित-कोकिल-मञ्जुमते
 मिलित-पुलिन्द-मनोहर-गुञ्जित-रञ्जितशैल-निकुञ्जगते।
 निजगुणभूत-महाशबरीगण-सद्गुण-सम्भृत-केलितले
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १४ ॥

कटितट-पीत-दुकूल-विचित्र-मयूख-तिरस्कृत-चन्द्ररुचे
 प्रणत-सुरासुर-मौलिमणिस्फुर-दंशुल-सन्नख-चन्द्ररुचे।
 जित-कनकाचल-मौलिपदोर्जित-निर्भर-कुञ्जर-कुम्भकुचे
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १५ ॥

विजित-सहस्रकरैक-सहस्रकरैक-सहस्रकरैकनुते
 कृतसुरतारक-सङ्गरतारक-सङ्गरतारक-सूनुसुते ।
 सुरथ-समाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १६ ॥

पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं स शिवे
 अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
 तव पदमेव परम्पदमित्यनुशीलयतो मम किं न शिवे
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १७ ॥

कनकलसत्कल-सिन्धुजलैरनुसिञ्चिनुते गुण-रङ्गभुवम्
 भजति स किं न शचीकुच-कुम्भ-तटी-परिरम्भ-सुखानुभवम्।
 तव चरणं शरणं करवाणि नतामरवाणि निवासि शिवम्
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १८ ॥

तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते
 किमु पुरुहूत-पुरीन्दुमुखी-सुमुखीभिरसौ विमुखी क्रियते।
 मम तु मतं शिवनामधने भवती कृपया किमुत क्रियते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ १९ ॥

अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
 अयि जगतो जननी कृपयाऽसि यथाऽसि तथाऽनुमितासिरते।
 यदुचितमत्र भवत्युररि कुरुतादुरुतापमपाकुरुते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते ॥ २० ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-महिषासुरमर्दिनि-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

वन्दे पद्मकरां प्रसन्नवदनां सौभाग्यदां भाग्यदाम्
 हस्ताभ्यामभयप्रदां मणिगणैर्नानाविधैर्भूषिताम्।
 भक्ताभीष्टफलप्रदां हरिहरब्रह्मादिभिः सेविताम्
 पार्श्वे पङ्कजशङ्खपद्मनिधिभिर्युक्तां सदा शक्तिभिः ॥
 सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे।
 भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

प्रकृतिं विकृतिं विद्यां सर्वभूतहितप्रदाम्।
 श्रद्धां विभूतिं सुरभिं नमामि परमात्मिकाम् ॥ १ ॥
 वाचं पद्मालयां पद्मां शुचिं स्वाहां स्वधां सुधाम्।
 धन्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं नित्यपुष्टां विभावरीम् ॥ २ ॥

अदितिं च दितिं दीप्तां वसुधां वसुधारिणीम्।
नमामि कमलां कान्तां क्षमां क्षीरोदसम्भवाम्॥ ३ ॥

अनुग्रहप्रदां बुद्धिमनघां हरिवल्लभाम्।
अशोकाममृतां दीप्तां लोकशोकविनाशिनीम्॥ ४ ॥

नमामि धर्मनिलयां करुणां लोकमातरम्।
पद्मप्रियां पद्महस्तां पद्माक्षीं पद्मसुन्दरीम्॥ ५ ॥

पद्मोद्भवां पद्ममुखीं पद्मनाभप्रियां रमाम्।
पद्ममालाधरां देवीं पद्मिनीं पद्मगन्धिनीम्॥ ६ ॥

पुण्यगन्धां सुप्रसन्नां प्रसादाभिमुखीं प्रभाम्।
नमामि चन्द्रवदनां चन्द्रां चन्द्रसहोदरीम्॥ ७ ॥

चतुर्भुजां चन्द्ररूपामिन्दिरामिन्दुशीतलाम्।
आह्लादजननीं पुष्टिं शिवां शिवकरीं सतीम्॥ ८ ॥

विमलां विश्वजननीं तुष्टिं दारिद्र्यनाशिनीम्।
प्रीतिपुष्करिणीं शान्तां शुक्लमाल्याम्बरां श्रियम्॥ ९ ॥

भास्करीं बिल्वनिलयां वरारोहां यशस्विनीम्।
वसुन्धरामुदाराङ्गां हरिणीं हेममालिनीम्॥ १० ॥

धनधान्यकरीं सिद्धिं स्त्रैणसौम्यां शुभप्रदाम्।
नृपवेश्मगतानन्दां वरलक्ष्मीं वसुप्रदाम्॥ ११ ॥

शुभां हिरण्यप्राकारां समुद्रतनयां जयाम्।
नमामि मङ्गलां देवीं विष्णुवक्षःस्थलस्थिताम्॥ १२ ॥

विष्णुपत्नीं प्रसन्नाक्षीं नारायणसमाश्रिताम्।
दारिद्र्यध्वंसिनीं देवीं सर्वोपद्रवहारिणीम्॥ १३ ॥

नवदुर्गा महाकालीं ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकाम्।
 त्रिकालज्ञानसम्पन्नां नमामि भुवनेश्वरीम् ॥ १४ ॥
 लक्ष्मीं क्षीरसमुद्रराजतनयां श्रीरङ्गधामेश्वरीम्
 दासीभूतसमस्तदेवनितां लोकैकदीपाङ्कुराम्।
 श्रीमन्मन्दकटाक्षलब्धविभवब्रह्मेन्द्रगङ्गाधराम्
 त्वां त्रैलोक्यकुटुम्बिनीं सरसिजां वन्दे मुकुन्दप्रियाम् ॥ १५ ॥

मातर्नमामि कमले कमलायताक्षि
 श्रीविष्णुहृत्कमलवासिनि विश्वमातः।
 क्षीरोदजे कमलकोमलगर्भगौरि
 लक्ष्मि प्रसीद सततं नमतां शरण्ये ॥ १६ ॥

॥ फलश्रुतिः ॥

त्रिकालं यो जपेद्विद्वान् षण्मासं विजितेन्द्रियः।
 दारिद्र्यध्वंसनं कृत्वा सर्वमाप्नोत्ययत्नतः ॥ १७ ॥
 देवीनामसहस्रेषु पुण्यमष्टोत्तरं शतम्।
 येन श्रियमवाप्नोति कोटिजन्मदरिद्रितः ॥ १८ ॥
 भृगुवारे शतं धीमान् पठेद्वत्सरमात्रकम्।
 अष्टैश्वर्यमवाप्नोति कुबेर इव भूतले ॥ १९ ॥
 दारिद्र्यमोचनं नाम स्तोत्रमम्बापरं शतम्।
 येन श्रियमवाप्नोति कोटिजन्मदरिद्रितः ॥ २० ॥
 भुक्त्वा तु विपुलान् भोगानस्याः सायुज्यमाप्नुयात्।
 प्रातःकाले पठेन्नित्यं सर्वदुःखोपशान्तये।
 पठंस्तु चिन्तयेद्देवीं सर्वाभरणभूषिताम् ॥ २१ ॥
 ॥ इति श्री-लक्ष्म्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ कनकधारास्तवम् ॥

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
 भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
 अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला
 माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥ १ ॥

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
 प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि।
 माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
 सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥ २ ॥

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दम्
 आनन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।
 आकेकरस्थितकनीनिकपक्षमनेत्रम्
 भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥ ३ ॥

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
 हारावलीव हरिनीलमयी विभाति।
 कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
 कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥ ४ ॥

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारेः
 धाराधरे स्फुरति या तडिदङ्गनेव।
 मातुः समस्तजगतां महनीयमूर्तिः
 भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥ ५ ॥

प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावात्
 माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन।
 मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धम्
 मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥ ६ ॥

विश्वामरेन्द्रपदवीभ्रमदानदक्षम्
 आनन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
 ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्धम्
 इन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥ ७ ॥

इष्टा विशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र-
 दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते।
 दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टाम्
 पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥ ८ ॥

दद्यादयानुपवनो द्रविणाम्बुधाराम्
 अस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे।
 दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरम्
 नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥ ९ ॥

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति
 शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति।
 सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै
 तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥ १० ॥

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
 रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै।
 शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
 पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥ ११ ॥

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
 नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूम्यै।
 नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
 नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ॥ १२ ॥
 नमोऽस्तु हेमाम्बुजपीठिकायै
 नमोऽस्तु भूमण्डलनायिकायै।
 नमोऽस्तु देवादिदयापरायै
 नमोऽस्तु शार्ङ्गायुधवल्लभायै ॥ १३ ॥
 नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै
 नमोऽस्तु विष्णोरुरसि स्थितायै।
 नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
 नमोऽस्तु दामोदरवल्लभायै ॥ १४ ॥
 नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
 नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै।
 नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै
 नमोऽस्तु नन्दात्मजवल्लभायै ॥ १५ ॥
 सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
 साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि।
 त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
 मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥ १६ ॥
 यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः
 सेवकस्य सकलार्थसम्पदः।
 सन्तनोति वचनाङ्गमानसैः
 त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥ १७ ॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
 धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे।
 भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
 त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥ १८ ॥

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट-
 स्वर्वाहिनी विमलचारुजलाप्लुताङ्गीम्।
 प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-
 लोकाधिनाथगृहिणीम् अमृताब्धिपुत्रीम् ॥ १९ ॥

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं
 करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः ।
 अवलोकय मामकिञ्चनानां
 प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥ २० ॥

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमीभिरन्वहम्
 त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम्।
 गुणाधिका गुरुतरभाग्यभागिनो
 भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥ २१ ॥

देवि प्रसीद जगदीश्वरि लोकमातः
 कल्याणगात्रि कमलेक्षणजीवनाथे।
 दारिद्र्यभीतिहृदयं शरणागतं माम्
 आलोकय प्रतिदिनं सदयैरपाङ्गैः ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-कनकधारास्तवं सम्पूर्णम् ॥

॥ सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

॥ ध्यानम् ॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
 या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
 या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा पूजिता
 सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥

॥ स्तोत्रम् ॥

सरस्वती महाभद्रा महामाया वरप्रदा।
 श्रीप्रदा पद्मनिलया पद्माक्षी पद्मवक्रका ॥ १ ॥
 शिवानुजा पुस्तकभृज्ज्ञानमुद्रा रमा परा।
 कामरूपा महाविद्या महापातकनाशिनी ॥ २ ॥
 महाश्रया मालिनी च महाभोगा महाभुजा।
 महाभागा महोत्साहा दिव्याङ्गा सुरवन्दिता ॥ ३ ॥
 महाकाली महापाशा महाकारा महाङ्कुशा।
 पीता च विमला विश्वा विद्युन्माला च वैष्णवी ॥ ४ ॥
 चन्द्रिका चन्द्रवदना चन्द्रलेखविभूषिता।
 सावित्री सुरसा देवी दिव्यालङ्कारभूषिता ॥ ५ ॥
 वाग्देवी वसुदा तीव्रा महाभद्रा महाबला।
 भोगदा भारती भामा गोविन्दा गोमती शिवा ॥ ६ ॥
 जटिला विन्ध्यवासा च विन्ध्याचलविराजिता।
 चण्डिका वैष्णवी ब्राह्मी ब्रह्मज्ञानैकसाधना ॥ ७ ॥

सौदामिनी सुधामूर्तिः सुभद्रा सुरपूजिता ।
 सुवासिनी सुनासा च विनिद्रा पद्मलोचना ॥ ८ ॥
 विद्यारूपा विशालाक्षी ब्रह्मजाया महाफला ।
 त्रयीमूर्ती त्रिकालज्ञा त्रिगुणा शास्त्ररूपिणी ॥ ९ ॥
 शुम्भासुरप्रमथिनी शुभदा च स्वरात्मिका ।
 रक्तबीजनिहन्त्री च चामुण्डा चाम्बिका तथा ॥ १० ॥
 मुण्डकायप्रहरणा धूम्रलोचनमर्दना ।
 सर्वदेवस्तुता सौम्या सुरासुरनमस्कृता ॥ ११ ॥
 कालरात्रिः कलाधारा रूपसौभाग्यदायिनी ।
 वाग्देवी च वरारोहा वाराही वारिजासना ॥ १२ ॥
 चित्राम्बरा चित्रगन्धा चित्रमाल्यविभूषिता ।
 कान्ता कामप्रदा वन्द्या विद्याधरसुपूजिता ॥ १३ ॥
 श्वेतानना नीलभुजा चतुर्वर्गफलप्रदा ।
 चतुराननसाम्राज्या रक्तमध्या निरञ्जना ॥ १४ ॥
 हंसासना नीलजङ्घा ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका ।
 एवं सरस्वतीदेव्या नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ १५ ॥
 ॥ इति श्री-सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥



॥ वेङ्कटेश सुप्रभातम् ॥

कौसल्या सुप्रजा राम पूर्वा सन्ध्या प्रवर्तते।
उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाह्निकम् ॥ १ ॥

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द उत्तिष्ठ गरुडध्वज।
उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मङ्गलं कुरु ॥ २ ॥

मातः समस्तजगतां मधुकैटभारेः
वक्षोविहारिणि मनोहरदिव्यमूर्ते।
श्रीस्वामिनि श्रितजनप्रियदानशीले
श्रीवेङ्कटेशदयिते तव सुप्रभातम् ॥ ३ ॥

तव सुप्रभातमरविन्दलोचने
भवतु प्रसन्नमुखचन्द्रमण्डले।
विधिशङ्करेन्द्रवनिताभिरर्चिते
वृषशैलनाथदयिते दयानिधे ॥ ४ ॥

अत्र्यादिसप्तऋषयः समुपास्य सन्ध्याम्
आकाशसिन्धुकमलानि मनोहराणि।
आदाय पादयुगमर्चयितुं प्रपन्नाः
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ ५ ॥

पञ्चाननाब्जभवषण्मुखवासवाद्याः
त्रैविक्रमादिचरितं विबुधाः स्तुवन्ति।
भाषापतिः पठति वासरशुद्धिमारात्
शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ ६ ॥

ईषत्प्रफुल्ल-सरसीरुह-नारिकेल-
 पूगद्रुमादि-सुमनोहरपालिकानाम् ।
 आवाति मन्दमनिलः सह दिव्यगन्धैः
 शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ ७ ॥

उन्मील्य नेत्रयुगमुत्तमपञ्जरस्थाः
 पात्रावशिष्टकदलीफलपायसानि ।
 भुक्त्वा सलीलमथ केलिशुकाः पठन्ति
 शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ ८ ॥

तन्त्रीप्रकर्षमधुरस्वनया विपञ्च्या
 गायत्यनन्तचरितं तव नारदोऽपि ।
 भाषासमग्रमसकृत्करचाररम्यम्
 शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ ९ ॥

भृङ्गावली च मकरन्दरसानुविद्ध-
 झङ्कारगीत निनदैः सह सेवनाय ।
 निर्यात्युपान्तसरसीकमलोदरेभ्यः
 शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ १० ॥

योषागणेन वरदघ्निविमथ्यमाने
 घोषालयेषु दधिमन्थनतीव्रघोषाः ।
 रोषात्कलिं विदधते ककुभश्च कुम्भाः
 शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ ११ ॥

पद्मेशमित्रशतपत्रगतालिवर्गाः
 हर्तुं श्रियं कुवलयस्य निजाङ्गलक्ष्म्या ।
 भेरीनिनादमिव बिभ्रति तीव्रनादम्
 शेषाद्रिशेखरविभो तव सुप्रभातम् ॥ १२ ॥

श्रीमन्नभीष्टवरदाखिललोकबन्धो
 श्रीश्रीनिवास जगदेकदयैकसिन्धो।
 श्रीदेवतागृहभुजान्तरदिव्यमूर्ते
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १३ ॥
 श्रीस्वामिपुष्करिणिकाऽऽप्लवनिर्मलाङ्गाः
 श्रेयोऽर्थिनो हरविरिञ्चसनन्दनाद्याः।
 द्वारे वसन्ति वरवेत्रहतोत्तमाङ्गाः
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १४ ॥
 श्रीशेषशैल-गरुडाचल-वेङ्कटाद्रि-
 नारायणाद्रि-वृषभाद्रि-वृषाद्रि-मुख्याम्।
 आख्यां त्वदीय वसतेरनिशं वदन्ति
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १५ ॥
 सेवापराः शिव-सुरेश-कृशानु-धर्म-
 रक्षोऽम्बुनाथ-पवमान-धनाधिनाथाः।
 बद्धाञ्जलि-प्रविलसन्निजशीर्ष-देशाः
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १६ ॥
 घाटीषु ते विहगराज-मृगाधिराज-
 नागाधिराज-गजराज-हयाधिराजाः।
 स्वस्वाधिकार-महिमाऽधिकमर्थयन्ते
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १७ ॥
 सूर्येन्दु-भौम-बुध-वाक्पति-काव्य-सौरि-
 स्वर्भानु-केतु-दिविषत्परिषत्प्रधानाः।
 त्वद्दास-दास-चरमावधि-दासदासाः
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १८ ॥

त्वत् पादधूलिभरितस्फुरितोत्तमाङ्गाः
 स्वर्गापवर्गनिरपेक्ष-निजान्तरङ्गाः।
 कल्पागमाऽऽकलनयाऽऽकुलतां लभन्ते
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ १९॥

त्वद्गोपुराग्रशिखराणि निरीक्षमाणाः
 स्वर्गापवर्गपदवीं परमां श्रयन्तः।
 मर्त्या मनुष्यभुवने मतिमाश्रयन्ते
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २०॥

श्रीभूमिनायक दयादिगुणामृताब्धे
 देवाधिदेव जगदेकशरण्यमूर्ते।
 श्रीमन्ननन्त-गरुडादिभिरर्चिताङ्गे
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २१॥

श्रीपद्मनाभ पुरुषोत्तम वासुदेव
 वैकुण्ठ माधव जनार्दन चक्रपाणे।
 श्रीवत्सचिह्न शरणागत-पारिजात
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २२॥

कन्दर्पदर्पहरसुन्दरदिव्यमूर्ते
 कान्ताकुचाम्बुरुह-कुङ्कुल-लोलदृष्टे।
 कल्याणनिर्मलगुणाकर दिव्यकीर्ते
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २३॥

मीनाकृते कमठ कोल नृसिंह वर्णिन्
 स्वामिन् परश्वथ तपोधन रामचन्द्र।
 शेषांशराम यदुनन्दन कल्किरूप
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २४॥

एला-लवङ्ग-घनसार-सुगन्धि-तीर्थम्
 दिव्यं वियत्सरिति हेमघटेषु पूर्णम्।
 धृत्वाऽद्य वैदिकशिखामणयः प्रहृष्टाः
 तिष्ठन्ति वेङ्कटपते तव सुप्रभातम्॥ २५ ॥

भास्वानुदेति विकचानि सरोरुहाणि
 सम्पूरयन्ति निनदैः ककुभो विहङ्गाः।
 श्रीवैष्णवाः सततमर्थित-मङ्गलास्ते
 धामाऽऽश्रयन्ति तव वेङ्कट सुप्रभातम्॥ २६ ॥

ब्रह्मादयः सुरवराः समहर्षयस्ते
 सन्तः सनन्दन मुखास्तव योगिवर्याः।
 धामान्तिके तव हि मङ्गलवस्तुहस्ताः
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २७ ॥

लक्ष्मीनिवास निरवद्यगुणैकसिन्धो
 संसार-सागर-समुत्तरणैकसेतो ।
 वेदान्तवेद्य निजवैभव भक्तभोग्य
 श्रीवेङ्कटाचलपते तव सुप्रभातम्॥ २८ ॥

इत्थं वृषाचलपतेरिह सुप्रभातम्
 ये मानवाः प्रतिदिनं पठितुं प्रवृत्ताः।
 तेषां प्रभातसमये स्मृतिरङ्गभाजाम्
 प्रज्ञां परार्थसुलभां परमां प्रसूते॥ २९ ॥
 ॥ इति श्री-वेङ्कटेश सुप्रभातम् सम्पूर्णम् ॥

॥ वेङ्कटेश स्तोत्रम् ॥

कमलाकुच-चूचुक-कुङ्कुमतो नियतारुणितातुल-नीलतनो।
कमलायतलोचन लोकपते विजयी भव वेङ्कटशैलपते ॥ १ ॥

सचतुर्मुख-षण्मुख-पञ्चमुख-प्रमुखाखिलदैवतमौलिमणे।
शरणागतवत्सल सारनिधे परिपालय मां वृषशैलपते ॥ २ ॥

अतिवेलतया तव दुर्विषहैरनुवेलकृतैरपराधशतैः।
भरितं त्वरितं वृषशैलपते परया कृपया परिपाहि हरे ॥ ३ ॥

अधिवेङ्कटशैलमुदारमते जनताभिमताधिकदानरतात्।
परदेवतया गदितान्निगमैः कमलादयितान्न परं कलये ॥ ४ ॥

कलवेणुरवावशगोपवधू शतकोटिवृतात्स्मरकोटिसमात्।
प्रतिवल्लविकाभिमतात्सुखदाद् वसुदेवसुतान्न परं कलये ॥ ५ ॥

अभिरामगुणाकर दाशरथे जगदेकधनुर्धर धीरमते।
रघुनायक राम रमेश विभो वरदो भव देव दयाजलधे ॥ ६ ॥

अवनीतनया-कमनीयकरं रजनीकरचारुमुखाम्बुरुहम्।
रजनीचरराजतमोमिहिरं महनीयमहं रघुराम मये ॥ ७ ॥

सुमुखं सुहृदं सुलभं सुखदं स्वनुजं च सुखायममोघशरम्।
अपहाय रघूद्वहमन्यमहं न कथञ्चन कञ्चन जातु भजे ॥ ८ ॥

विना वेङ्कटेशं न नाथो न नाथः

सदा वेङ्कटेशं स्मरामि स्मरामि।

हरे वेङ्कटेश प्रसीद प्रसीद

प्रियं वेङ्कटेश प्रयच्छ प्रयच्छ ॥ ९ ॥

अहं दूरतस्ते पदाम्भोजयुग्म
 प्रणामेच्छयाऽऽगत्य सेवां करोमि।
 सकृत्सेवया नित्यसेवाफलं त्वम्
 प्रयच्छ प्रयच्छ प्रभो वेङ्कटेश ॥ १० ॥

अज्ञानिना मया दोषानशेषान् विहितान् हरे।
 क्षमस्व त्वं क्षमस्व त्वं शेषशैल-शिखामणे ॥ ११ ॥
 ॥ इति श्री-वेङ्कटेश-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ वेङ्कटेश प्रपत्तिः ॥

ईशानां जगतोऽस्य वेङ्कटपतेर्विष्णोः परां प्रेयसीम्
 तद्वक्षःस्थल-नित्य-वासरसिकां तत्क्षान्ति-संवर्धिनीम्।
 पद्मालङ्कृतपाणिपल्लवयुगां पद्मासनस्थां श्रियम्
 वात्सल्यादिगुणोज्ज्वलां भगवतीं वन्दे जगन्मातरम् ॥ १ ॥

श्रीमन् कृपाजलनिधे कृतसर्वलोक
 सर्वज्ञ शक्त नतवत्सल सर्वशेषिन्।
 स्वामिन् सुशील सुलभाश्रितपारिजात
 श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ २ ॥

आनूपुरार्पितसुजातसुगन्धिपुष्प-
 सौरभ्यसौरभकरौ समसन्निवेशौ।
 सौम्यौ सदाऽनुभवनेऽपि नवानुभाव्यौ
 श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ३ ॥

सद्योविकासिसमुदित्वरसान्द्रराग-
 सौरभ्यनिर्भरसरोरुहसाम्यवार्ताम्।
 सम्यक्षु साहसपदेषु विलेखयन्तौ
 श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ४ ॥

रेखामयध्वजसुधाकलशातपत्र-
 वज्राङ्कुशाम्बुरुहकल्पकशङ्खचक्रैः।
 भव्यैरलङ्कृततलौ परतत्त्वचिह्नैः
 श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ५ ॥

ताम्रोदरद्युतिपराजितपद्मरागौ
 बाह्यैर्महोभिरभिभूतमहेन्द्रनीलौ।
 उद्यन्नखांशुभिरुदस्तशशाङ्कभासौ
 श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ६ ॥

सप्रेमभीति कमलाकरपल्लवाभ्याम्
 संवाहनेऽपि सपदि क्लममादधानौ।
 कान्ताववाङ्मन-सगोचर-सौकुमार्यौ
 श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ७ ॥

लक्ष्मीमहीतदनुरूपनिजानुभाव-
 नीलादिदिव्यमहिषीकरपल्लवानाम्।
 आरुण्यसङ्क्रमणतः किल सान्द्ररागौ
 श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ८ ॥

नित्यानमद्विधिशिवादिकिरीटकोटि-
 प्रत्युप्त-दीप्त-नवरत्न-महःप्ररोहैः।
 नीराजनाविधिमुदारमुपाददानौ
 श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ९ ॥

विष्णोः पदे परम इत्युतिदप्रशंसौ
 यौ मध्व उत्स इति भोग्यतयाऽप्युपात्तौ।
 भूयस्तथेति तव पाणितलप्रदिष्टौ
 श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ १० ॥

पार्थाय तत्सदृश-सारथिना त्वयैव
 यौ दर्शितौ स्वचरणौ शरणं व्रजेति।
 भूयोऽपि मह्यमिह तौ करदर्शितौ ते
 श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ ११ ॥

मन्मूर्ध्नि कालियफणे विकटाटवीषु
 श्रीवेङ्कटाद्रिशिखरे शिरसि श्रुतीनाम्।
 चित्तेऽप्यनन्यमनसां सममाहितौ ते
 श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ १२ ॥

अम्लानहृष्यदवनीतलकीर्णपुष्पौ
 श्रीवेङ्कटाद्रि-शिखराभरणायमानौ।
 आनन्दिताखिल-मनो-नयनौ तवैतौ
 श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ १३ ॥

प्रायः प्रपन्न-जनता-प्रथमावगाह्यौ
 मातुः स्तनाविव शिशोरमृतायमानौ।
 प्राप्तौ परस्परतुलामतुलान्तरौ ते
 श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ १४ ॥

सत्त्वोत्तरैः सतत-सेव्यपदाम्बुजेन
 संसार-तारक-दयार्द्र-दृगञ्चलेन।
 सौम्यौ पयन्तृमुनिना मम दर्शितौ ते
 श्रीवेङ्कटेश चरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ १५ ॥

श्रीश श्रिया घटिकया त्वदुपायभावे
 प्राप्ये त्वयि स्वयमुपेयतया स्फुरन्त्या।
 नित्याश्रिताय निरवद्यगुणाय तुभ्यम्
 स्यां किङ्करो वृषगिरीश न जातु मह्यम् ॥ १६ ॥
 ॥ इति श्रीवेङ्कटेश प्रपत्तिः सम्पूर्णः ॥

॥ वेङ्कटेश मङ्गलाशासनम् ॥

श्रियः कान्ताय कल्याणनिधये निधयेऽर्थिनाम्।
 श्रीवेङ्कटनिवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम् ॥ १ ॥
 लक्ष्मी-सविभ्रमालोक-सुभ्रू-विभ्रमचक्षुषे।
 चक्षुषे सर्वलोकानां वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥ २ ॥
 श्रीवेङ्कटाद्रि-शृङ्गाग्र-मङ्गलाभरणाङ्घ्रये ।
 मङ्गलानां निवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम् ॥ ३ ॥
 सर्वावयवसौन्दर्य-सम्पदा सर्वचेतसाम्।
 सदा सम्मोहनायास्तु वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥ ४ ॥
 नित्याय निरवद्याय सत्यानन्दचिदात्मने।
 सर्वान्तरात्मने श्रीमद्-वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥ ५ ॥
 स्वतस्सर्वविदे सर्वशक्तये सर्वशेषिणे।
 सुलभाय सुशीलाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥ ६ ॥
 परस्मै ब्रह्मणे पूर्णकामाय परमात्मने।
 प्रयुञ्जे परतत्त्वाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥ ७ ॥

आकालतत्त्वमश्रान्तमात्मनामनुपश्यताम्।
 अतृप्यमृतरूपाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥ ८ ॥
 प्रायः स्वचरणौ पुंसां शरण्यत्वेन पाणिना।
 कृपयाऽऽदिशते श्रीमद्-वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥ ९ ॥
 दयामृत-तरङ्गिण्यास्तरङ्गैरिव शीतलैः।
 अपाङ्गैः सिञ्चते विश्वं वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥ १० ॥
 स्रग्भूषाम्बरहेतीनां सुषमावहमूर्तये।
 सर्वार्तिशमनायास्तु वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥ ११ ॥
 श्रीवैकुण्ठविरक्ताय स्वामिपुष्करिणीतटे।
 रमया रममाणाय वेङ्कटेशाय मङ्गलम् ॥ १२ ॥
 श्रीमत् सुन्दरजामातृमुनिमानसवासिने।
 सर्वलोकनिवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम् ॥ १३ ॥
 मङ्गलाशासनपरैर्मदाचार्य-पुरोगमैः ।
 सर्वैश्च पूर्वैराचार्यैः सत्कृतायास्तु मङ्गलम् ॥ १४ ॥
 ॥ इति श्री-वेङ्कटेश-मङ्गलाशासनं सम्पूर्णम् ॥



॥ नवग्रहस्तोत्रम् ॥

जपाकुसुमसङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोरि सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥ १ ॥

दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥ २ ॥

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥ ३ ॥

प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥ ४ ॥

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥ ५ ॥

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥ ६ ॥

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥ ७ ॥

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥ ८ ॥

पलाशपुष्पसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥ ९ ॥

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ॥ १० ॥

नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशनम्।

ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ॥ ११ ॥

ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः।

ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ॥ १२ ॥

॥ इति श्रीव्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ गङ्गाष्टकम् ॥

भगवति भवलीलामौलिमाले तवाम्भः

कणमणुपरिमाणं प्राणिनो ये स्पृशन्ति।

अमरनगरनारीचामरमरग्राहिणीनां

विगतकलिकलङ्कातङ्कमङ्के लुठन्ति ॥ १ ॥

ब्रह्माण्डं खण्डयन्ती हरशिरसि जटावल्लिमुल्लासयन्ती

स्वर्लोकादापतन्ती कनकगिरिगुहागण्डशैलात् स्वलन्ती।

क्षोणी पृष्ठे लुठन्ती दुरितचयचमूं निर्भरं भर्त्सयन्ती

पाथोधिं पूरयन्ती सुरनगरसरित् पावनी नः पुनातु ॥ २ ॥

मज्जनमातङ्गकुम्भच्युतमदमदिरामोदमत्तालजालम्

स्नानैः सिद्धाङ्गनानां कुचयुगविगलत् कुङ्कुमासङ्गपिङ्गम्।

सायं प्रातर्मुनीनां कुशकुसुमचयैश्छिन्नतीरस्थनीरम्

पायान्नो गाङ्गमम्भः करिकलभकराक्रान्तरं हस्तरङ्गम् ॥ ३ ॥

आदावादिपितामहस्य नियमव्यापारपात्रे जलं

पश्चात् पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनम्।

भूयः शम्भुजटाविभूषणमणिर्जहोर्महर्षेरियं

कन्या कल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी पातु माम् ॥ ४ ॥

शैलेन्द्रादवतारिणी निजजल-मज्जजनोत्तारिणी
 पारावारविहारिणी भवभयश्रेणी-समुत्सारिणी।
 शेषाहेरनुकारिणी हरशिरोवल्लीदलाकारिणी
 काशीप्रान्तविहारिणी विजयते गङ्गा मनोहारिणी ॥ ५ ॥

कुतो वीची वीचिस्तव यदि गता लोचनपथम्
 त्वमापीता पीताम्बरपुग्निवासं वितरसि।
 त्वदुत्सङ्गे गङ्गे पतति यदि कायस्तनुभृताम्
 तदा मातः शान्तक्रतवपदलाभोऽप्यतिलघुः ॥ ६ ॥

भगवति तव तीरे नीरमात्राशनोऽहम्
 विगतविषयतृष्णः कृष्णमाराधयामि।
 सकलकलुषभङ्गे स्वर्गसोपानगङ्गे
 तरलतरतरङ्गे देवि गङ्गे प्रसीद ॥ ७ ॥

मातर्जाह्नवी शम्भुसङ्गवलिते मौलौ निधायाञ्जलिं
 त्वत्तीरे वपुषोऽवसानसमये नारायणाङ्घ्रिद्वयम्।
 सानन्दं स्मरतो भविष्यति मम प्राणप्रयाणोत्सवे
 भूयाद् भक्तिरविच्युता हरिहराद्वैतात्मिका शाश्वती ॥ ८ ॥

गङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् प्रयतो नरः।
 सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुलोकं स गच्छति ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
 श्री-गोविन्द-भगवत्पूज्य-पाद-शिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ
 श्री-गङ्गाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

गङ्गे त्रैलोक्यसारे सकलसुरवधूधौतविस्तीर्णतोये
 पूर्णब्रह्मस्वरूपे हरिचरणरजोहारिणि स्वर्गमार्गे।
 प्रायश्चित्तं यदि स्यात् तव जलकाणिका ब्रह्महत्यादिपापे
 कस्त्वां स्तोतुं समर्थः त्रिजगदघहरे देवि गङ्गे प्रसीद ॥

॥ कावेरी प्रार्थना ॥

मरुद्वृधे महाभागे महादेवि मनोहरे।
 सर्वाभीष्टप्रदे देवि स्नास्थितां पुण्यवर्धिनि ॥ १ ॥

सर्वपापक्षयकरे मम पापं विनाशय।
 कवेरकन्ये कावेरि समुद्रमहिषिप्रिये ॥ २ ॥

देहि मे भक्तिमुक्ति त्वं सर्वतीर्थस्वरूपिणि।
 सिन्धुवर्ये दयासिन्धो मामुद्धर दयाम्बुधे ॥ ३ ॥

स्त्रियं देहि सुतं देहि श्रियं देहि ततः स्वगा।
 आयुष्यं देहि चाऽऽरोग्यं ऋणान्मुक्तं कुरुष्व माम् ॥ ४ ॥

तासां च सरितां मध्ये सह्यकन्याऽघनाशिनि।
 कावेरि लोकविख्याता जनतापनिवारिणि ॥ ५ ॥

॥ इति श्री-ब्रह्माण्ड पुराणे कावेरी प्रार्थना सम्पूर्णा ॥

॥ वन्दे मातरम् ॥

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्

शस्यश्यामलां मातरम्।

शुभ्र-ज्योत्स्नाम् पुलकित-यामिनीम्

फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदलशोभिनीम्।

सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्

सुखदां वरदां मातरम्॥

सप्तकोटि कण्ठ-कलकल-निनाद-कराले

निसप्तकोटि-भुजैर्धृत-खरकरवाले

के बोले मा तुमी अबले

बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्

रिपुदलवारिणीं मातरम्॥

तुमि विद्या तुमि धर्म तुमि हृदि तुमि मर्म।

त्वं हि प्राणाः शरीरे बाहु ते तुमि मा शक्ति।

हृदये तुमि मा भक्ति

तोमारै प्रतिमा गडि मन्दिरे मन्दिरे॥

त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी

कमला कमलदल विहारिणी

वाणी विद्यादायिनी नमामि त्वाम्

नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्

सुजलां सुफलां मातरम्॥

श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्

धरणीं भरणीं मातरम्॥

॥ क्षमा प्रार्थना ॥

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
तानि सर्वाणि हे देव क्षमस्व पुरुषोत्तम॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव नारायण नमोऽस्तु ते॥

विसर्गबिन्दुमात्राणि पदपादाक्षराणि च।
न्यूनानि चातिरिक्तानि क्षमस्व पुरुषोत्तम॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्याऽऽत्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग् भवेत्॥

सर्वं श्री-कृष्णार्पणमस्तु॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

हरिः ॐ तत् सत्॥



॥ ज्यौतिष-बाल-पाठः ॥

॥ संवत्सराः षष्टिः ॥

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः।
अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥ १ ॥

ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ॥ २ ॥

सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः।
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥ ३ ॥

हेमलम्बो विलम्बोऽथ विकारी शार्वरी प्लवः।
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥ ४ ॥

प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणविरोधिकृत्।
परिधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नलः ॥ ५ ॥

पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती।
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः ॥ ६ ॥

| | | |
|--------------|----------------|--------------|
| १. प्रभवः | ९. युवा | १७. सुभानुः |
| २. विभवः | १०. धाता | १८. तारणः |
| ३. शुक्लः | ११. ईश्वरः | १९. पार्थिवः |
| ४. प्रमोदः | १२. बहुधान्यः | २०. व्ययः |
| ५. प्रजापतिः | १३. प्रमाथी | २१. सर्वजित् |
| ६. अङ्गिराः | १४. विक्रमः | २२. सर्वधारी |
| ७. श्रीमुखः | १५. वृषः | २३. विरोधी |
| ८. भावः | १६. चित्रभानुः | २४. विकृतिः |

| | | |
|--------------|----------------|------------------|
| ௨௫. खरः | ௩௫. क्रोधी | ௪௯. राक्षसः |
| ௨௬. नन्दनः | ௩௬. विश्वावसुः | ௫௦. नलः |
| ௨௭. विजयः | ௪௦. पराभवः | ௫௧. पिङ्गलः |
| ௨௮. जयः | ௪௧. प्लवङ्गः | ௫௨. कालयुक्तिः |
| ௨௯. मन्मथः | ௪௨. कीलकः | ௫௩. सिद्धार्थी |
| ௩௦. दुर्मुखः | ௪௩. सौम्यः | ௫௪. रौद्रः |
| ௩௧. हेमलम्बः | ௪௪. साधारणः | ௫௫. दुर्मतिः |
| ௩௨. विलम्बः | ௪௫. विरोधिकृत् | ௫௬. दुन्दुभिः |
| ௩௩. विकारी | ௪௬. परिधावी / | ௫௭. रुधिरोद्गारी |
| ௩௪. शार्वरी | परितापी | ௫௮. रक्ताक्षः |
| ௩௫. प्लवः | ௪௭. प्रमादी | ௫௯. क्रोधनः |
| ௩௬. शुभकृत् | ௪௮. आनन्दः | ௬௦. क्षयः |
| ௩௭. शोभनः | | |

॥ अयने द्वे ॥

௧. उत्तरम् (उत्तरायणम्) ௨. दक्षिणम् (दक्षिणायनम्)

॥ ऋतवः षट् ॥

௧. वसन्तः ௨. ग्रीष्मः ௩. वर्षाः ௪. शरत् ௫. हेमन्तः ௬. शिशिरः

॥ பருவங்கள் ஆறு ॥

- | | |
|--------------------|-------------------|
| 1. இளவேனில்காலம் | 4. கூதிர்காலம் |
| 2. முதுவேனில்காலம் | 5. முன்பனிக்காலம் |
| 3. கார்காலம் | 6. பின்பனிக்காலம் |

॥ மாசா: ட்வாடச ॥

சௌரமாசா: ராசயசு ஸௌர மாதங்கள்

| | | |
|-----|----------|------------|
| 1. | மேச: | சித்திரை |
| 2. | வृषभ: | வைகாசி |
| 3. | मिथुनम् | ஆனி |
| 4. | कटक: | ஆடி |
| 5. | सिंह: | ஆவணி |
| 6. | कन्या | புரட்டாசி |
| 7. | तुला | ஐப்பசி |
| 8. | वृश्चिक: | கார்த்திகை |
| 9. | धनु: | மார்கழி |
| 10. | मकर: | தை |
| 11. | कुम्भ: | மாசி |
| 12. | मीन: | பங்குனி |

ऋतुमासा: सौरमासा: ऋतु: चान्द्रमासा: Gregorian

(सौरमासेन ऋतुमासस्य चान्द्रमासस्य च अन्तयोगः, आधुनिकस्य आदियोगः)

| | | | | |
|--------|---------|----------|----------|-------|
| मधु: | मेष: | वसन्तः | चैत्र: | April |
| माधव: | वृषभ: | | वैशाख: | May |
| शुक्र: | मिथुनम् | ग्रीष्मः | ज्यैष्ठ: | June |
| शुचि: | कटक: | | आषाढ: | July |

ऋतुमासाः सौरमासाः ऋतुः चान्द्रमासाः Gregorian

(सौरमासेन ऋतुमासस्य चान्द्रमासस्य च अन्तयोगः, आधुनिकस्य आदियोगः)

| | | | | |
|--------|----------|---------|-------------|-----------|
| नभाः | सिंहः | वर्षाः | श्रावणः | August |
| नभस्यः | कन्या | | भाद्रपदः | September |
| इषः | तुला | शरत् | आश्वयुजः | October |
| ऊर्जः | वृश्चिकः | | कार्तिकः | November |
| सहाः | धनुः | हेमन्तः | मार्गशीर्षः | December |
| सहस्यः | मकरः | | पौषः | January |
| तपाः | कुम्भः | शिशिरः | माघः | February |
| तपस्यः | मीनः | | फाल्गुनः | March |

॥ पक्षौ द्वौ ॥

१. शुक्लः २. कृष्णः

॥ तिथयः पञ्चदश ॥

प्रतिपत्पूर्णिमान्तश्च शुक्लपक्षः प्रकीर्तितः।

पूर्णिमायाः प्रतिपदश्चामावास्यान्त एव च ॥

कृष्णपक्षस्तु विज्ञेयो वेदविद्भिर्निरूपितः।

द्वितीया च तृतीया च चतुर्थी पञ्चमी तथा ॥

षष्ठी च सप्तमी चैव ह्यष्टमी नवमी तथा।

दशम्येकादशी चापि द्वादशी च त्रयोदशी।

चतुर्दशी कुहूर्यावद्दिनं तु गणनं स्मृतम् ॥

—श्रीब्रह्मवैवर्त-महापुराणे श्रीकृष्णजन्मखण्डे उत्तरार्धे नारदनारायणसंवादे राधोद्धवसंवादे कालनिरूपणं

नाम षण्णवतितमेऽध्याये श्लोकाः ६५-:७.५

| | |
|--------------------|---------------------|
| १. प्रथमा/प्रतिपत् | ९. नवमी |
| २. द्वितीया | १०. दशमी |
| ३. तृतीया | ११. एकादशी |
| ४. चतुर्थी | १२. द्वादशी |
| ५. पञ्चमी | १३. त्रयोदशी |
| ६. षष्ठी | १४. चतुर्दशी |
| ७. सप्तमी | १५. पूर्णिमा |
| ८. अष्टमी | १६. अमावास्या/कुहुः |

॥ वासराः सप्त (கிழமைகள் ஏழு) ॥

| | | | |
|-----------|----------|-----------|---------|
| १. भानुः | ஞாயிறு | ५. गुरुः | வியாழன் |
| २. इन्दुः | திங்கள் | ६. भृगुः | வெள்ளி |
| ३. भौमः | செவ்வாய் | ७. स्थिरः | சனி |
| ४. सौम्यः | புதன் | | |

॥ नक्षत्राणि सप्तविंशतिः

நக்ஷத்ரங்கள் இருபத்தேழு ॥

अश्विनी भरणी चापि कृत्तिका रोहिणी तथा ।
मृगशिरस्तथाऽऽर्द्रा च नक्षत्रे द्वे पुनर्वसू ।
पुष्याश्लेषे मघा चैव पूर्वा चोत्तरफाल्गुनी ॥

ஹஸ்தசித்ரே ததா ஸ்வாதி விஸாஸா சானுராஹிகா ।
ஜ்யேஸ்தா மூலம் ததா ஜ்ஞேயா பூர்வாஸாஹோத்தரா ததா ॥

ஸ்ரவணாஹிஜிதி சைவ ஢னிஸ்தா ச ப்ரகீர்திதா ।
தத: ஸதஹிஸா ஜ்ஞேயா பூர்வாஹாட்ரபடா ததா ॥

ததஹோத்தரா து விஜ்ஞேயா ரேவதி சரமா ஸ்மர்தா ।
அஸ்தாவிங்ஸதி நக்சத்ரம் கலத்ரம் ஸஸினஸ்ததா ॥

—ஸ்ரீ஢்ரஹ்மவீர்த-மஹாபுராணே ஸ்ரீகृஷ்ணஜந்மஸுக்ஷே உத்தரார்தே நாரதநாராயணஸ்வா஢ே ரா஢ோ஢்வஸ்வா஢ே காலநிரூபணம்

நாம ஸுணவதிதமே஢்஢்யாயே ஸ்லோகா: 64-72

| | |
|------------------|-------------|
| 1. அஸ்தினி | அஸ்த்விணி |
| 2. ஢ரணி | பரணி |
| 3. கர்த்திகா | கருத்திகை |
| 4. ரோஹிணி | ரோஹ்ரிணி |
| 5. மூரூஸீர்ஷம் | மருகஸீர்ஷம் |
| 6. ஆத்ரா | திருவாதிரை |
| 7. புநர்வஸு: | புனர்பூசம் |
| 8. புஸ்ய: | பூசம் |
| 9. ஆஸுஷேஸா | ஆயில்யம் |
| 10. ம஢ா | மகம் |
| 11. பூர்வபல்குனி | பூரம் |
| 12. உத்தரபல்குனி | உத்திரம் |
| 13. ஹஸ்த: | ஹஸ்தம் |

| | |
|-------------------------------|--------------|
| 14. சித்ரா | சித்திரை |
| 15. ஸ்வாதி | ஸ்வாதி |
| 16. விஷாखा | விஷாகம் |
| 17. அநுராधा | அனுஷம் |
| 18. ஜ்யேஷ்டா | கேட்டை |
| 19. மூலம் | மூலம் |
| 20. பூர்வாஷாடா | பூராடம் |
| 21. உத்தராஷாடா | உத்திராடம் |
| 22. ஶ்ரவணம் | திருவோணம் |
| 23. ஶ்ரவிஷ்டா/தனிஷ்டா | அவிட்டம் |
| 24. ஶதபிஷக் | சதயம் |
| 25. பூர்வ-ப்ரோஷ்டபதா/பாட்ரபதா | பூரட்டாதி |
| 26. உத்தர-ப்ரோஷ்டபதா/பாட்ரபதா | உத்திரட்டாதி |
| 27. ரேவதி | ரேவதி |

॥ ஜன்மானுஜன்ம்-நக்சத்ராணி ॥

| | | |
|-------------|--------------|---------------------------|
| அஷ்வினி | மதா | மூலம் |
| பரணி | பூர்வபல்஑ுனி | பூர்வாஷாடா |
| கூத்திகா | உத்தரபல்஑ுனி | உத்தராஷாடா |
| ரோஹிணி | ஹஸ்த: | ஶ்ரவணம் |
| மூகாஷிர்ஷம் | சித்ரா | ஶ்ரவிஷ்டா/தனிஷ்டா |
| ஆத்ரா | ஸ்வாதி | ஶதபிஷக் |
| புனர்வசு: | விஷாखा | பூர்வ-ப்ரோஷ்டபதா/பாட்ரபதா |
| புஷ்ய: | அநுராधा | உத்தர-ப்ரோஷ்டபதா/பாட்ரபதா |
| ஆஷ்லேஷா | ஜ்யேஷ்டா | ரேவதி |

நக்சத்ராணா் ராசய:

| நக்சத்ரம் | பாட: | ராசி: |
|------------------|------|-----------|
| 1. அஸ்வினி | ௧ | மேச: |
| 2. பரணி | ௨ | |
| 3. கர்திகா | ௩ | |
| 4. ரோஹிணி | ௪ | வரூபம்: |
| 5. மரூகசீர்ஷம் | ௫ | |
| 6. ஆர்த்ரா | ௬ | |
| 7. புனவ்ஸு: | ௭ | மித்ருனம் |
| 8. புஷ்ய: | ௮ | |
| 9. ஆசுலேஷா | ௯ | |
| 10. ம஘ா | 10 | சிங்ஃ |
| 11. பூர்வ஫ல்குனி | 11 | |
| 12. உத்तर஫ல்குனி | 12 | |
| 13. ஹஸ்த: | 13 | கன்யா |
| 14. சித்ரா | 14 | |
| 15. ஸ்வாதி | 15 | |
| 16. விசாஸா | 16 | துலா |
| 17. அனூரா஘ா | 17 | |
| 18. ஜ்யேஷ்டா | 18 | |

| नक्षत्रम् | पादः | राशिः |
|-------------------------------|------|--------|
| १९. मूलम् | १९ | धनुः |
| २०. पूर्वाषाढा | २० | |
| २१. उत्तराषाढा | २१ | |
| २२. श्रवणम् | २२ | मकरः |
| २३. श्रविष्ठा/धनिष्ठा | २३ | |
| २४. शतभिषक् | २४ | |
| २५. पूर्व-प्रोष्ठपदा/भाद्रपदा | २५ | कुम्भः |
| २६. उत्तर-प्रोष्ठपदा/भाद्रपदा | २६ | |
| २७. रेवती | २७ | |

॥ योगाः सप्तविंशतिः ॥

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यं शोभनस्तथा।
अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च॥

गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा।
वज्रः सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः।
सिद्धः साध्यः शुभः शुभ्रो ब्राह्मो माहेन्द्र-वैधृती॥

- | | | |
|--------------|-------------|---------------|
| १. विष्कम्भः | ७. सुकर्मा | १३. व्याघातः |
| २. प्रीतिः | ८. धृतिः | १४. हर्षणः |
| ३. आयुष्मान् | ९. शूलः | १५. वज्रः |
| ४. सौभाग्यम् | १०. गण्डः | १६. सिद्धिः |
| ५. शोभनः | ११. वृद्धिः | १७. व्यतीपातः |
| ६. अतिगण्डः | १२. ध्रुवः | १८. वरीयान् |
| | | १९. परिघः |

| | | |
|------------|------------|----------------|
| २०. शिवः | २२. साध्यः | २५. ब्राह्मः |
| | २३. शुभः | २६. माहेन्द्रः |
| २१. सिद्धः | २४. शुभ्रः | २७. वैधृतिः |

॥ करणानि एकादश ॥

बवश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा।
 गरश्च वणिजश्चापि विष्टिश्च शकुनिस्तथा।
 चतुष्पाच्चापि नागश्च किंस्तुघ्न इति कीर्तितम्॥

—श्रीब्रह्मवैवर्त-महापुराणे श्रीकृष्णजन्मखण्डे उत्तरार्धे नारदनारायणसंवादे राधोद्धवसंवादे कालनिरूपणं

नाम षण्णवतितमेऽध्याये श्लोकः ८२

चराणि सप्त

१. बवम् २. बालवम् ३. कौलवम् ४. तैतिलम्
 ५. गरजा ६. वणिजा ७. भद्रा

स्थिराणि चत्वारि

१. शकुनिः २. चतुष्पात् ३. नागवान् ४. किंस्तुघ्नम्

॥ तिथीनां पूर्वोत्तरार्ध-करणानि ॥

| | तिथिः | पूर्वार्ध-करणम् | उत्तरार्ध-करणम् |
|-----|----------------|-----------------|-----------------|
| १. | शुक्ल-प्रथमा | किंस्तुघ्नम् | बवम् |
| २. | शुक्ल-द्वितीया | बालवम् | कौलवम् |
| ३. | शुक्ल-तृतीया | तैतिलम् | गरजा |
| ४. | शुक्ल-चतुर्थी | वणिजा | भद्रा |
| ५. | शुक्ल-पञ्चमी | बवम् | बालवम् |
| ६. | शुक्ल-षष्ठी | कौलवम् | तैतिलम् |
| ७. | शुक्ल-सप्तमी | गरजा | वणिजा |
| ८. | शुक्ल-अष्टमी | भद्रा | बवम् |
| ९. | शुक्ल-नवमी | बालवम् | कौलवम् |
| १०. | शुक्ल-दशमी | तैतिलम् | गरजा |
| ११. | शुक्ल-एकादशी | वणिजा | भद्रा |
| १२. | शुक्ल-द्वादशी | बवम् | बालवम् |
| १३. | शुक्ल-त्रयोदशी | कौलवम् | तैतिलम् |
| १४. | शुक्ल-चतुर्दशी | गरजा | वणिजा |
| १५. | पौर्णमासी | भद्रा | बवम् |
| १६. | कृष्ण-प्रथमा | बालवम् | कौलवम् |
| १७. | कृष्ण-द्वितीया | तैतिलम् | गरजा |
| १८. | कृष्ण-तृतीया | वणिजा | भद्रा |
| १९. | कृष्ण-चतुर्थी | बवम् | बालवम् |
| २०. | कृष्ण-पञ्चमी | कौलवम् | तैतिलम् |
| २१. | कृष्ण-षष्ठी | गरजा | वणिजा |
| २२. | कृष्ण-सप्तमी | भद्रा | बवम् |
| २३. | कृष्ण-अष्टमी | बालवम् | कौलवम् |
| २४. | कृष्ण-नवमी | तैतिलम् | गरजा |
| २५. | कृष्ण-दशमी | वणिजा | भद्रा |
| २६. | कृष्ण-एकादशी | बवम् | बालवम् |
| २७. | कृष्ण-द्वादशी | कौलवम् | तैतिलम् |
| २८. | कृष्ण-त्रयोदशी | गरजा | वणिजा |
| २९. | कृष्ण-चतुर्दशी | भद्रा | शकुनिः |
| ३०. | अमावास्या | चतुष्पात् | नागवान् |

॥ ग्रहाः नव ॥

आदित्याय च सोमाय मङ्गलाय बुधाय च।
गुरुशुक्रशनिभ्यश्च राहवे केतवे नमः॥

१. सूर्यः/आदित्यः
२. चन्द्रः/सोमः/इन्दुः
३. मङ्गलः/अङ्गारकः/कुजः/भौमः
४. बुधः/सौम्यः
५. गुरुः/बृहस्पतिः
६. शुक्रः/भृगुः/काव्यः
७. शनैश्चरः/मन्दः
८. राहुः
९. केतुः

आरोग्यं प्रददातु नो दिनकरश्चन्द्रो यशो निर्मलम्
भूतिं भूमिसुतः सुधांशुतनयः प्रज्ञां गुरुगौरवम्।
काव्यः कोमलवाग्विलासमतुलं मन्दो मुदं सर्वदा
राहुर्बाहुबलं विरोधशमनं केतुः कुलस्योन्नतिम्॥

